॥ श्री ॥

विष्णु सहस्र नाम

भाषा टीका सहित



टीका कार
स्व० पं० बनमालि चतुर्वेदी मथुरा ।

प्रकाशक—

लाला श्यामलाल हीरालाल

श्याम काशी प्रेस मथुरा ।



सन् १९३६ मूल्य ।-)



॥ श्री ॥

विष्णु सहस्र नामार्थः

भाषा टीका ।



प्रकाशक—

लाला श्यामलाल हीरालाल,

श्याम काशी प्रेस मथुरा ।



मुद्रक—

नारायण दास, लक्ष्मण-प्रेस,

गोला दीनानाथ, बनारस सिटी ।

सन् १९३६ मूल्य ।-)

ओ३म्ः

परमात्मने नमः ।

विष्णु सहस्रनामार्थः



यस्य स्मरणमात्रेण जन्म संसार बन्धनात् ।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ १ ॥
नमः समस्त भूतानामादि भूताय भूभृते ।
अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ २ ॥

मैं उन जगतव्याप्त प्रकर्षकर सर्वत्र होने वाले श्रीविष्णुभगवान् के अर्थ प्रणाम करता हूँ कि जिनके केवल स्मरण मात्र करने से ही ये जीव जन्म मरण रूप इस संसारके बंधनसे छूट जाता है ॥१॥ और प्रकृति महत्तत्व आदि सबभूतों का आदि भूत (कारण) शेष रूप हो भूमिका धारण करने वाला अथवा इन्द्रादि रूप होकर पोषण करने वाला जिसे अनेक रूप से निरूपण करते हैं उस अन्तर्यामी रूपसे सर्वत्र होने वाले व्यापक विष्णु के अर्थ मेरा नमस्कार है ॥

वैशम्पायन उवाच ।

श्रुत्वाधर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः ।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥ ३ ॥

अर्थ–वैशम्पायननाम ऋषिजी कहते हैंकि हे जनमेजय पूर्वप्रकार से भीष्मजी के कहे सब प्राणी मात्रों के सम्पूर्ण धर्मों को राजा

युधिष्ठिर जी श्रवण कर फिर भी अत्युत्कृष्ट धर्मों के श्रवणोत्कंठ हो कर शान्तनु नन्दन भीष्म जी से प्रश्न करने लगे ॥२॥

युधिष्ठिर उवाच ।

किमेकंदैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम्
स्तुवन्तःकं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ।४।

अर्थ—हे पितामह जो इस विश्व में एक (अद्वितीय) देवता कौन हैं और सर्वोत्कृष्ठ एक (अद्वीतीय) ही आश्रय रूप कौन हैं और किसको स्तुति करते किसको पूजन करते मनुष्य अपने अभीष्ट ऐहिक पारत्रिक भोग मोक्षादि शुभमनोरथों को प्राप्त होते हैं ये कहो ॥ ४ ॥

को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः ।
किंजपन्मुच्यते जंतुजन्मसंसार बन्धनात् ॥५॥

अर्थ—और हे पितामह जी ! आपके मत से सब धर्मों में उत्तमोत्तम धर्म कौन सा हैं और किसको जप करता मनुष्य इस जन्म मरण रूप संसार के बन्धन से छूट जाता है ये कहौ ॥ ५ ॥

इस प्रकार युधिष्ठिर ने भीष्म जी से छः प्रश्न किये अनन्तर भीष्मजी कहने लगे——

भीष्म उवाच ।

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥६॥

तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्यापुरुषमव्ययम् ।
ध्यायन् स्तुवन्नमस्यंश्चयजमान स्तमेवच ॥७॥
अनादिनिधनंविष्णुसर्व लोक महेश्वरम् ।
लोकध्यक्षंस्तुवन्नित्यंसर्वदुःखातिगोभवेत् ॥ ८॥

अर्थ—तब भीष्मजी ने उत्तर दिया कि सुनिये हे युधिष्ठिर जी जगत्प्रभु (अखिल ब्रह्माण्डपति) देवों के भी देव जिसका अन्त नहीं उन भगवान् को ये पुरुष उत्थित (सावधान हो) उठकर भगवान् के सहस्र १००० नामों से स्तुति करता और भक्ति से उन्हीं भगवान को कायिक मानसिक वाचिक प्रकार से नित्य (सब समय) सदा एक रूप से वर्तमान भगवान् को स्तुति करता पूजन करता ध्यान करता यजन करता आध्यात्मिक आधिभौतिककादि ऐहिकामुष्मिक कायिकादि सब दुःखों से निवृत्त होता है क्योंकि वोही भगवान् विष्णु सब लोकोंका एकही महान् ईश्वर हैं। जो आदि मध्य अन्त से रहित है और यावन्मात्र लोकों का अध्यक्ष (नियंता है) उन्हीं को स्तुति करता सर्व दुःखतीत होता है अर्थात् भगवद्भजन से अन्य दःख दूर करने का और उपाय नहीं है ॥ ६ ॥ ॥७ ॥ ८ ॥

ब्रह्मण्य सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्ति बर्धनम् ।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥ ९ ॥

अर्थ—जो भगवान् ब्रह्मण्य (ब्राह्मणों को हित करनेवाले) वेद के पालन करने वाले सब धर्मों के जानने वाले लोकों की कीर्ति के बढ़ाने वाले लोकों के नाथ और सर्व भूतों के कल्याण तथा

उद्भव करने वाले महद् भूत नाम जिससे और कोई अधिक नहीं है उन्हीं भगवान् के स्मरण करने से सब दुःखोंसे छूट जाता है ॥९॥

एष मे सर्वधर्माणां धर्मोधिक तमोमतः ।
यद्भक्त्यापुंडरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरःसदा ॥ १० ॥

अर्थ—सुनो युधिष्ठिर जी मैंने तो सब धर्मों से उत्तमोत्तम धर्म येही माना है कि जो अनेक स्तुति वाक्यों से सब समय भक्ति से पुण्डरीकाक्ष भगवान् का पूजन करे क्योंकि येही भागवत में भी कहा है कि (तस्मात् भारत सर्वात्मा भगवान् हरिरीश्वरः श्रोतव्य कीर्तितव्यश्चध्येयः पूज्यश्चनित्यदा) इस वाक्य से भगवद्भजन करने में किसी देश कालका नियम नहीं रक्खा है ऐसा सिद्धान्त है कि सब समय और सब जगह यानी पवित्रा पवित्र देश काल का कोई भी इस में नियम नहीं रक्खा गया है ॥१०॥

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः ।
परमं यो महद्ब्रह्म परमंयः परायणम् ॥ ११ ॥

अर्थ—जो तेजों में परम सर्वोत्कृष्ट महत् तेज रूप है, और जो सर्वोत्कृष्ट तप रूप है जो सर्वोत्तम महद् ब्रह्म है और सब जगत का परम सर्वोत्कृष्ट परायण (परमाश्रय) है ॥११॥

पवित्राणां पवित्रं यो मंगलानांच मंगलम् ।
दैवतं दैवतानांच भूतानांयोऽव्ययःपिता ॥१२॥

अर्थ—पवित्रों में पवित्र है अर्थात् जिसके अधिकार और कोई पवित्र नहीं हैं मंगलों का भी मंगल रूप है देवताओं का भी जो देवता है और भूतों का भी जो अव्यय पिता है ॥१२॥

यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे ।
यस्मिश्च प्रलय यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥ १३ ॥

अर्थ--जिससे आदि युग के आगम में सब प्राणी मन्त्र उत्पन्न होते हैं और फिर प्रलय के समय में सब प्राणी मात्र जिसमें लय होते हैं ॥ १३ ॥

तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते ।
विष्णोर्नामसहस्र मेश्रणु पापभयापहम् ॥ १४ ॥

अर्थ—वो सब लोगों में प्रधान जगतोंका नाथ जो विष्णु भगवान है उन भगवान् के सब पापों के नाश करने वाले सहस्र नामों को श्रवण करो ॥ १४ ॥

यानि नामानि गौणानि विख्यातानिमहात्मनः ।
ऋषिभिःपरिगीतानि तानि वक्ष्यामिभूतये।१५।

अर्थ—उन भगवान् महात्मा के जो गुणों के निमित्तसे (भक्तवत्सलादि) नाम है जो कि नाम वेद पुराण श्रुति स्मृत में विख्यात है और व्यास बाल्मीकि आदि ऋषियों ने गान किये हैं उन नामों के लेने वाले मनुष्यों के अखिल ऐहिक पारत्रिक ऐश्वर्य प्राप्तिके लिये मैं कहूँगा उसे श्रवण करो ॥ १५ ॥

ऋषिनाम्नां सहस्रस्य वेद व्यासो महामुनिः ।
छंदोऽनुष्टुप् तथा देवो भगवान्देवकीसुतः ॥ १६ ॥

अर्थ—इन सहस्रनाम स्तोत्र के महामुनि श्री वेदव्यासजी तो

ऋषि हैं अनुष्टम् नामका छन्द और देवकी नंदन भगवान् श्री कृष्णाचन्द्र देवता हैं ॥ १६ ॥

विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम् ।
अनेकरूपदैत्यान्तं नमामि पुरुषोत्तमम् ॥१७॥

अर्थ—अंतर्यामी रूप से सब जीव जात में भीतर प्रवेश करने वाले जय करना जिनका स्वभाव प्रकर्ष करके सब देश सब कालमें होने वाले ब्रह्म रुद्रादिकों के भी ईश्वर अनेक रूप धारणाकर दैत्यों के मारने वाले पुरुषोत्तम भगवान को प्रणाम करता हूँ ॥ १७ ॥

ऊँअस्यश्रीजिष्णोर्दिव्य सहस्रनामस्तोत्रमाला- मन्त्रस्य श्रीभगवान्वेद व्यासऋगि रनुष्टुप्छंदः श्रीकृष्णःपरमात्मादेवता, आत्कयोनिःस्वयंजात इति बीजम् देवकीनंदनःस्रष्टेतिशक्तिः उद्भव, क्षोभणो देव इति परमोमंत्रः शंखभृन्नन्दकी चक्राति कीलकम्-श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे सहश्रनाम स्तोत्रजपे विनियोगः ॥

अर्थ—इस श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र माला मंत्रके श्रीभगवान् वेदव्यासजी ऋषि (प्रवर्तक) है अनुष्टुप् नाम का इस स्तोत्र मंत्रका छन्द है श्रीकृष्णा परमात्मा देवता हैं (आत्मयोनिः स्वयजातः) ये मंत्र इसका बीज है (देवकी नन्दनः स्रष्टा) ये मंत्र इस स्तोत्रकी शक्ति मानी है (उद्भवः क्षोभणोदेवः) ये मंत्र इस स्तोत्र का उत्तम मंत्र है (शंखभृन्नन्दकीचक्री) ये मंत्र इस स्तोत्र

का कीलक है और श्रीकृष्णचन्द्रकी प्राप्ति के अर्थ में इस स्तोत्र का पाठ करता हूँ ऐसा मुखसे उच्चारण कर हाथ में जल लेकर किसी पात्रमें उस जल को छोड़ दे इसको विनियोग कहते हैं।

अथ अंगन्यासः।

ॐ शिरसि श्रीवेदव्यासऋषये नमः॥ ॐ मुखेअनुष्टुपछन्दसे नमः॥ ॐ हृदि श्री कृष्णपरमात्मा देवतायै नमः ॥ ॐ सर्वांगशंखभृन्नन्दकीचक्रीति कीलकायनमः

अब अंगन्यास करना बताते हैं (श्रीवेदव्यास ऋषये नमः) ऐसा कहकर पाठ करने वाला मनुष्य अपने शिरसे हाथ लगावै (अनुष्टुपछन्दसेनमः) ऐसा कहकर मुख से हाथ लगावै (श्रीकृष्णपरमात्मादेवतायैनमः) ऐसा मुख से उच्चारण कर अपने हृदय से हाथ लगावै (शंखभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकायनमः) ऐसा कह कर अपने सर्वांग में हाथ फेरे इसे अंग न्यास कहते हैं।

अथ करन्यासः।

ॐ उद्भवाय अंगुष्ठाभ्यान्नमः। ॐ क्षोभणाय तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ देवाय मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ उद्भवाय अनामिकाभ्यां नमः। ऊ क्षोभणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ देवाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥

अर्थ—(ॐ उद्भवायनमः) ऐसा कह कर पाठ करने वाला अपने दोनों हाथ के अगूठों को स्पर्श करै (क्षोभणायनमः) ऐसा कह कर दोनों अपनी अगूठों के पास वाली अंगुली को स्पर्श करै (देवायनमः) ऐसा कहकर बिचली अँगुली को फिर (उद्भवायनमः) ऐसा कहकर अनामिका अंगुली को (क्षोभणायनमः) कहकर छुगुनी अंगुली को स्पर्श करे फिर (ॐदेवायनमः) कहकर दोनों हाथोंको परस्पर स्पर्श करै इसे कर पृष्ठ कहते हैं इति करन्यासः ।

अथ हृदयादिन्यासः ।

ॐ विश्वंविष्णुर्बषट्कारे इतिहृदयायनमः ॥ अमृतां शूद्भवोभानु रिति शिरसे स्वाहा ॥ब्रह्मण्योब्रह्मकृद्ब्रह्मेति शिखायै वषट् ॥ सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यइति कवचाय हुं॥ आदित्योज्योतिरादित्य इतिनेत्रत्रयाय वौषट्॥ शांरंगधन्वागदाधर इत्यस्त्राय फट् ॥

अर्थ—(ॐविश्वं विष्णुर्बषट्कारः) ऐसा कर अपने हृदय से हाथ लगावै (अमृतांशूद्भवोभानु) ऐसा कह कर शिर पर हाथ फेरै (ब्रह्मण्योब्रह्मकृद्ब्रह्म) ऐसा कहकर अपनी चोटी से हाथ लगावै (सुवर्णाविन्दुरक्षोभ्य) ऐसा कहकर अपने दोनों हाथों से दोनों कंधों को स्पर्श करै (आदित्योज्योतिरादित्यः) ऐसा कह कर दोनों नेत्रों को स्पर्श करे (शांरगधन्वागदाधरः) इस मंत्र को पढ़कर दोनो हाथों से तीन ताली बजावे इन अंगन्यास कर-

न्यास और हृदयादिन्यास करने का प्रयोजन यह है कि उक्त मंत्रों से प्रत्यंग स्पर्श करने से सर्वांगों की शुद्धि हो जाने से स्तोत्र पाठ करनेका अधिकारी होता है इससे इन तीनों न्यासों को उक्त रीति से करके फिर इस मंत्रसे स्तोत्राधिष्ठाता विष्णु भगवान्, का ध्यान करै ॥

अथ ध्यानम् ।

शान्ताकारं भुजंगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ॥
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुभवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥ १ ॥

अर्थ——शान्ते जिनका आकार है शेषनाग पर शयन करने वाले कमल जिनकी नाभि से उत्पन्न हुआ इन्द्रादि देवों के नियन्ता शिवके आधार सजल नवनील मेघ के समान श्यामांग वाले लक्ष्मी के पति नव नीलोत्पल कमल के समान जिनके नेत्र सनकादि योगियों के ध्यान के गमन करने वाले संसार के भय के नाश करने वाले और चतुर्दश लोकों के एक (अद्वितीयनाथ) श्री विष्णु भगवान् को मैं बारंबार बन्दन करता हूँ।

अथ नामानि ।

ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ।
भूतकृद् भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ।१।
पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमागतिः

अव्ययः पुरुषः साक्षीक्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥२॥
योगो योगविदानेता प्रधान पुरुषेश्वरः।
नारसिंहवपुः श्रीमान केशवः पुरुषोत्तमः॥ ३ ॥

भीष्म जी कहते हैं, कि हे युधिष्ठिर! सब जीव मात्रों में जो सत्ता रूप से प्रवेश करते हैं इससे आपका विश्व (१) नाम है १ सब को अपने निज रूप से व्याप्त करने वाले ब्रह्म होने से आपका बिष्णु नाम है २। यज्ञादिकों के प्रवर्तक होने से आपका वषट्कार (२) नाम हैं ३ बीतेकाल के होने वाले कालके और जो वर्तमान कालके नियन्ता होनेसे आपको (भूतभव्यभवत्प्रभु नामहै ४) सब भूत प्राणी मात्रों के अथवा जत्कार पञ्च महा भूतों के करने वाले हैं इससे आपका (भूत कृत नाम हैं ५) उत्पन्न किये उन्हीं भूतों के भरण पोषण करने से वा धरण करने से आपका (भूत भृत् नाम है ६) सत्ता रूप से सर्वस्वरूप होने से आपका (भावनाम हैं ७) फिर उन्हीं भूतोंका आत्मा होने से आप का (भूतात्मा नाम हैं ८) फिर उन्हीं भूतों की निरन्तर भावना करते हैं अर्थात् अपनी दया दृष्टि से देखते रहते हैं इससे आपका (भूत भावन नाम है ९) १ पवित्र किये आत्मा के होने से आप का (पूतात्मा नाम है १०) पर जे ब्रह्म रुद्रेन्द्रादि उनके भी आत्मा होने से आप का (परमात्मा) (३) नाम है ११) इससे

---

(१) विश् प्रवेशने इत्यस्मात् धातोः [अशू पृषि लष्टिकणि खटि विशिभ्यः क्वन्] इति कर्तरि औणादिकः क्वन् प्रत्ययः [२] वषट् पूकात् कृभः [कर्मण्यण]

(३) परो मा अस्य सपरम परमश्चा सावात्मा परमात्मा

सार से जे निवृत्त हो गये हैं उनके सर्वोत्तम आश्रय होने से भाव का (मुक्तानां परमागति नाम है १२) सब समय एक रूप और न्यूनातिरेक रहित होने से आपका (अव्यय नाम है १३) नव द्वार के शरीर रूप पुर में शयन करने से आपका (पुरुष नाम है) १४ सब विश्व के साक्षात् देखने से आपका (साक्षी) नाम है १५) क्षेत्रनाम शरीरके जानने वा होने से आपका (क्षेत्रज्ञ) नाम है १६ और सदा एक समान रहने से अर्थात कम नहीं होने से आप का (अक्षर) (१) नाम है १७) और सब समय सब प्राणी मात्र में युक्त रहने से आपका (योग) (२) नाम है १८ योग अष्टांग के जानने वालों के वश करने वाले होने से आपका योग विदां नेता नाम है १९ । प्रधान प्रकृति पुरुष दोनोंके नियंता वस करने वाले होने से आपका (प्रधान पुरुषेश्वर नाम है २०) नर और सिंह रूपको भक्त जनों के रक्षणार्थ धारण करने से आपका [नार-सिंह वपुः नाम है २१ और स्वर्ण रेखरूपसे लक्ष्मी जी को हृद-यमें बामभागमें धारण करने से आपका [श्रीमान् नाम है २२] अत्यन्त प्रशस्त केशों के होने से अथवा क (ब्रह्मा) और ईश शिव इन दोनों को वश करने वाले होने से या केशी नामक कंस भृत्य दैत्य के मारने वाले होने से आपका (केशव(३)नाम है २३) और क्षर से अलग और अक्षर से उमत्तम होने से आपका पुरु-षोत्तमः [४] नाम है २४ ॥ ३ ॥

नक्षरति इति अक्षरः क्षर धातोः पचाद्यच सदानुभूयमाःनो पिनिः सीमगुण गौरवात् मुक्तैः क्वचिन्नक्षर त्यीत्यक्षरः पगिकी र्तितः (२)युज्यते प्राप्यते अनेन इति योगः रुजिर् योगे ततोऽक-र्तारिचकारके संज्ञायाम् घञ—
(३) कश्च ईश्च केशौ केशौ वशयति केशवः अथवा केशाब्दोन्य तरस्याम् इति केशशब्दातवःप्र० (४) यस्मात् क्षरमती तोहम क्षरादपिचोत्तमः अतोस्मि लोके वेदे चप्रथिनः पुरुषोतमइतिगीतासु

सर्गः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः ।
सम्भवो भावनो भर्त्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥४॥

और सब काल सब देश और सब स्वरूप होने से आपका (सर्व नाम है २५) दुष्ट दैत्य हिरण्यकशिपु रावणादिकों के हिंसक होने से आपका (शर्व (१) नाम है (२६) भक्तजनों को कल्याण पद देने से आपका शिवनाम है २७ सब काल में एकाकार रहने से और काल करके नहीं चलायमान होने से आपका (स्थाणु नाम है २८) और सब महत्तत्वादि पंच भूतों की तथा जगज्जात भूत प्राणीमात्रों के आदि कारण होने से आपका (भूतादि नाम है २९) और भक्तजन भजन करने वाले जीवों को भोगमोक्षादि अभीष्ट पदार्थों के देने से आपका (निधि रव्यय नाम है ३० अर्थात् जो भंडार कभी कमती नहीं होता सब निखिल ब्रह्मांडों के पैदा करने वाले होने से और इच्छा से मूर्ति धारण करने से आपका (सम्भव नाम है ३१) भक्तों के मनोवांछित के विना मांगे भावना करनेवाले होने से आपका (भावन नाम है ३२) अखिल अनन्त कोटि ब्रह्मांडों के और तदगत अखिल भक्त जनों को भरण पालन पोषण करने से आपका (भर्तानाम है ३३) और इन अन्त कोटि ब्रह्मांडों को उत्पन्न करते हो इससे आपका (प्रभाव नाम है) ३४ और सबों को सर्वमनो वांछित देने में समर्थ होने से आपका (प्रभु (२) नाम है ३५) और

---

(१) शृहिंशायां इति धातोः कृणृशृद्दभ्योवः इतिः वप्रत्ययः
(२) विप्रसंभ्योड्वसंज्ञायाम् प्रपूर्वात भूहत्यस्मतड्डुप्रत्यः ।

सब को वश करके रखते हो इससे आप का (ईश्वर (१) नाम है) इसमें (भीषास्माद्वातः पवते भीषोदेति सूर्यः) इत्यादि श्रुति प्रमाण हैं ३६ ।४।

स्वयम्भूः शम्भुरादित्यःपुष्कराक्षो महास्वनः ।
अनादिनिधनो धाताविधाता धातुरुत्तमः॥ ५ ॥

और आप अपनी इच्छासे ही रामकृष्णादि रूप होते हो इससे आप का स्वयम्भू नाम है ३७ अपने भक्तों को आप सब समय कल्याण रूप होते हो इससे आप का (शम्भु नाम है ३८) और किसी समय धर्म रक्षणार्थ अदिति जी कश्यप जी की पत्नी में आपके जन्म लेने से आपका (आदित्य) नाम है, ३९ और कमल के समान दिव्य विशाल नेत्र होने से आप का (पुष्कराक्ष (२) नाम है ४०) और वेद रूप बड़ा अनुपम शब्द होने से आपका (महास्वप्न नाम है ४१) और आदि तथा निधन (लय) रहित होने से आपका (अनादिनिधन नाम है ४२) और शेष रूप ही धारण करने से और विश्वम्भर रूप से विश्व का पोषण करेने से आपका (धाता नाम है ४३) ब्रह्मा के भी बनाने वाले होने से और शेष के भी धारण करने वाले होने से आप का (विधाता नाम है ४४) ब्रह्मा आदि बनाने वालों में उत्तम होने से आपका धातुरुत्तम (३) नाम है ४५ ॥ ५ ॥

---

(१)स्थेशभास पिसकसोवरच् इति ईशऐश्वर्येइत्यस्मात् वर च्प्रत्ययः
(२) अक्षिणी पुण्डरी के वभक्ता नुग्रहकारिणी यस्यासौ पुष्कराक्षः स्पादष्टवर्णास्तुपावकः बहुव्रीहौ सकृथ्यक्ष्णोः स्वंगात् षच्इति अक्षिशद्वात् षच्प्रत्ययः॥
(३) योवैस्यात्तु रुत्कृष्टः सच स्यात् धातुरुत्तमः—

अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठ, स्थविरोध्रुवः । ६ ।

अर्थ–आपका कोई भी प्रमाण नहीं कर सकता है और नारदादिक सनकादि भी जिसको नहीं प्रणामकर सकते हैं इससे (अप्रमेय (१) नाम है ४६ । सर्वेन्द्रियों के नियन्ता बस करने वाले होने से वा प्रेरक होने से आपका (हृषीकेश) नाम हैं ४७ जगत्कमल के नाभी में होने से आपक (पद्म नाभ नाम है ४८) अमर नाम इन्द्रादि देवों के प्रभु होने से आप का (अमर प्रभुनाम है ४६) आप ने ही ये विश्व बनाया है इस्से आपका विश्वकर्मा (२) नाम है ५० स्वायंभू आदि मनु रूप आपही हो इस से आप का (मनु नाम है ५१) फिर इस प्रकार निर्मित किये जगत् के सूक्ष्म करने से अथवा नाम रूप के व्याख्यान करने से व्यक्तावयव इस जगतके करने से आप का (त्वष्टा ३ नाम है ५२) अतिशय से स्थूल रूप होने से तथा विराट् रूप होने से आप का (स्थविष्ट ४ नाम हैं ५३) कालाधीन रहित होने से अर्थात् कालकृत् परिणाम रहित होने से आपका स्थविर (५) नाम है ५४ इस से आपका नाम ध्रुव

---

(१) ब्रह्मादीनांचकरणैर्नोमातुमपिशक्यते द्रष्टुं ह्यसाव प्रमेयःवच सामर्थ्यगोचरः (२) विश्वस्य जगतः कर्मव्यापारो यस्यलक्षणाम् प्राक ब्रह्मस्त्रुष्टेः ऊर्ध्वचविश्वकर्मेतिकथ्यते

(३) त्वक्षपितनू करोति इति (त्वष्टा) त्वक्षतनूकरणे धातोः कर्तरिवच् प्रत्ययः (४) स्थूल शब्दात् इष्ठन स्थूल दूर युवेति सूत्रेण यणादि पर लोपः पूर्वस्यगुणः (५) अजिर शिशिर स्थविरे त्युणादि सूत्रेणास्था धातोः किरच् प्रत्ययः बुगागमश्च

(१) है अर्थात् यहाँ काल कृत परिणाम नहीं है इसीमें यह प्रमाण है कि कालंसपचतेतत्रनकालस्तत्रवै प्रभुः ॥ ५५ ॥ ६ ॥

अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णोः लोहिताक्ष प्रतर्दनः ।
प्रभूतस्त्रिककुब्धामः पवित्रं मंगल परम् ॥ ७ ॥

अर्थ—और योगियों की समाधि में भी नहीं ग्रहण किये जाने से आप का (अग्राह्य) नाम हैं ५३ और सब समय में होने वाला होने से आपका (शाश्वत) नाम है ५७ नित्य आनन्द घनस्वरूप होने से और कृष्ण रूप होने से आप का (कृष्ण) नाम है ५८ लाल लाल स्वाभाविक नेत्रों में डोरे होने से (लोहिताक्ष) नाम है ५१ सब दुष्टों के प्रकर्ष करके तर्दन नाश करने वाले होने से आप का (प्रतर्दन) नाम है ६० सर्व संहारक होने पर भी, समृद्ध होने से आप का (प्रभूत) नाम है ६१ त्रिपाद् त्रिभूति लक्षण परधाम होने से (त्रिककुब्धाम) नाम है ६२ और परम पवित्र होने आपका (पवित्र) नाम है ६३ नित्य निर्मयाद कल्याणैकतान पर नाम अनन्त मगल होने से आप का (परमंगल) नाम है ६४ ॥७॥

ईशानः प्राणदः प्राणोज्येष्ठ श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥ ८ ॥

सब जगज्जात प्राणी जड चेतन को वश कर रखने से आपका (ईशान) नाम है ६५ फिर उन्हीं जड़ चेतन जगत जात को प्राण देने से आपका (प्राणद) नाम है ६६ फिर सब जगज्जात के प्राण रूप होने से आपका (प्राण) नाम है ६७ और प्रशस्तनोयों

(१) ध्रु गति स्थैर्ययोः इति धातोः कःप्रत्ययः उच्चडा देशः

में अति प्रशंसनीय होने से आपका (ज्येष्ठ) नाम है ६८ विश्व-भर में अद्वितीय प्रशंसनीय होने से आपका (श्रेष्ठ) नाम है ६९ और सब प्रजा के पालन करने से आपका (प्रजापती) नाम है ७० प्रकाशरूप ब्रह्मांड आपके गर्भ में है यासे आपका (हिरण्यगर्भ) नाम है ७१ और ये सब भूमण्डल आपने ही बना या है इससे आपका (भूगर्भ) नाम है ७२ लक्ष्मी के धव (पति) होने से माधव नाम है ७३ मधुनाम दैत्यको आपने मारा है इससे आपका (मधुसूदन) नाम है ७५ ॥ ८ ॥

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥९॥

अर्थ—कर्तुमकर्तुं अन्यथा कर्तुं समर्थ होने से आपका (ईश्वर) नाम है ७५ वामन रूप हो तीन डग से विश्व के नापने से आपका (विक्रमी) नाम है ७६ शार्ग नाम धनुष धारण करने से (धन्वी) नाम है ७७ सृष्टि पालन करने वाली बुद्धि युक्त होने से आपका (मेधावी) नाम है ७८ विशेष कर पराक्रम होने से आपका (विक्रम) नाम है ७९ वो अत्यन्त स्फीत । सुशोभित । होने से आपका क्रम नाम है ८० जिससे उत्तम अन्य कोई नहीं है इससे आपका (अनुत्तम) नाम है । ८१ कोई धर्षण नहीं कर सकता है अर्थात् दबा नहीं सकता है इससे आपका (दुराधर्ष) नाम है ८२ अपने भक्त के लिये हुए भजन पूजन स्मरण के जानने से आपका (कृतज्ञ) नाम है ८३ कर्तव्य रूप होने से आपका (कृति) नाम है ८४ सर्व आत्मा जीव जात आप में विद्यमान होने से आपका (आत्मवान्) नाम है ८५ ॥ ९ ॥

सुरेशः शरणं शर्म्म विश्वरेताः प्रजाभवः ।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययःसर्वदर्शनः ॥१०॥

अर्थ—इन्द्रादि ब्रह्मादिदेवताओंके स्वामी होनेसे आपका(सुरेश) नाम है ८६ दुःखियों के आश्रय रूप होनेसे आप का (शरण) नाम है ८७ कल्याण रूप होने से आपका (शर्म्म) नाम है ८८ सब विश्व आपका ही वीर्य है अर्थात् जगतके आदि कारण हो इससे आपका (विश्वरेता) नाम है ८९ ये सब प्रजा आप से ही हुई है इससे आपका (प्रजाभाव) नाम है ९० जगतको स्व स्व कार्य में प्रवृत्त करने वाले दिवस रूप होने से आपका (अहः) नाम है ९१ जगज्जात ब्रह्मादि स्तंवं पर्यन्त जीवजात की आयु सख्या करने से आपका (संवत्सर) नाम है ९२ ब्रह्मादि स्तंव पर्यन्त को अजगर की तरह निगलने से आपका (व्याल) नाम है ९३ आप में विश्वास रखने वाले जीवों को भोग मोक्ष की प्रतीत करते हो इससे आप का (प्रत्यय) नाम है ९४ सब देश और सब काल में आप के वर्तमान रहने से आपका (सर्व दर्शन) नाम है ९५ ॥ १० ॥:—

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः ।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिः सृतः ॥११॥

अर्थ—कभी जन्म नहीं होने से आपका (अज) नाम है ९६ ब्रह्मेन्द्र रुद्रादिकों के प्रेरक होने से आप का (सर्वेश्वर) नाम है ९७ सर्व देश सब काल में सिद्ध रहने से आपका (सिद्ध) नाम है ९८ भक्तजनों की मनोंवांछित सिद्ध करने वाले होने से आप का (सिद्धि) नाम है ९९ ब्रह्मादिकों के भी आदि कारण होने

से आपका (सर्वादि) नाम है १०० इति प्रथम शतकम् व्याख्याम सब समय एकाएक रूप रहने से आपका (अच्युत) नाम है। अथवा शरणागत हुआ जीव कभी च्युत नहीं होता इस्से आपका (अच्युत) नाम है १०१ श्रेष्ठ वाराह रूप होने से आप का (बृषाकपि) नाम है तदुक्तं भारते (कपिर्वराहः श्रेष्ठश्च धर्मश्च वृष उच्यते तस्माद्वृषा कपिं प्राहकाश्यपोपामां प्रजापतिः १०२ नहीं मान करवे में आवे है आत्मा जाको इससे आप का (अमेयात्मा) नाम है १०३ फिर सब योगों से विनिसृत अर्थात योगियों के योगों से अगम्य होनेसे आपका (सर्व योगविनःसृत) (१) नाम है १०४ ॥ ११ ॥:—

वसुर्वसुमनाः सत्थः समात्मा समितः समः ।
अमोघः पुंडरीकाक्षो बृषकर्मा बृषाकृतिः ।१२।

अर्थ—भक्तों में बसने से आप का (वसु) नाम है १०५ अपने भक्तों में वसु (धन) की तरह मन को राखो हो यासे आप का (वसुमना) नाम है १०६ फिर उन संतों में साधु होने से आप का (सत्य) नाम है १०७ फिर अपने भजन करने वालों में समान भाव रखने से आपका (समात्मा) नाम है १०८ फिर उन भक्तन सम्यक प्रकार माने हो यासों आपका नाम (सम्मित) है १०९ फिर उन ज्ञाता ज्ञात भक्तों में समभाव के रखने से आप का (सम) नाम है ११० आपका भजन स्मरण कभी मोघ (निष्फल) नहीं होने से (अमोघ) नाम है १११ पुंडरीक (कमल) से नेत्र होने आपका (पुंडरी काक्ष) नाम है ११२ धर्म रूप आपके कर्म होने से आपका (बृषकर्मा) (२) नाम है ११३

---

(१) सर्वैरुपायैः प्राप्यश्चसर्व योनविनिसृतः

[२] बृषु सेचनेद्दमुपधलक्षणः कःततोनांतलक्षणोदीर्घः

और साक्षात् आपकी धर्म रूप आकृत होने से (वृषाकृति) (१) नाम है ११४ ॥ १२ ॥

रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः ।
अमृतःशाश्वतःस्थाणुर्वरारोहो माहातपाः ॥१३॥

अर्थ—एवं विध रूप दर्शन सों अपने भक्तोंकी सानन्द रखने से और रुदन कराने से आपका (रुद्र (१) नाम है ११५ श्रुत्युक्त (सहस्रसीर्षा पुरुष) हजारो शिर होने से आपका (बहुशिरा) नाम है ११६ अनन्त रूप होकर भूमि के धारण करने से आपका (बभ्रु) (३) नाम है ११७ विश्व के कारण होनेसे आपका (विश्वयोनि) नाम है ११८ पवित्र यश होने से आपका (शुचिश्रवा) नाम है ११९ भक्तों को जन्म मरण से छुड़ाने से आपका (अमृत) नाम है १२० अनादि सिद्धि और स्थिर होने से आपका (शाश्वत-स्थाणु) नाम है १२१ वर नाम उत्तम आरोहकटि पश्चात् भाग तथा स्वप्राप्त होने से आपका (वैरारोह) (४) नाम है १२२ महत्पूज्य तप नाम ज्ञान है यासों (माहतपाः) आपका नाम है १२३ ॥ १३ ॥

सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः ।
वेदो वेदविदव्यंगो वेदांगो वेदवित्कविः ॥१४॥

---

(१) वृषःपूर्ववत्धर्मः धर्मरूपावृषाशीत्तलावा आकृतियस्य स

(२) रुदिर् अश्रु विमोचने रोदयति सानंद वाष्पान् करोतिइति

(३) भृञः कुभ्र इत्युश्चणादि कुः प्रत्ययः योनन्तः पृथ्वीं धत्तेशेखरस्थिति संस्थिताम् ।

(४) वरः उत्कृष्टः आरोहः आरोहणम् तत्तत्कर्तृकस्व प्राप्तिस्य अस्मिन वा इति

अर्थ—सर्वत्र आपकी गति है इससे (सर्वग) नाम है १२४ सबको जानते हो यासों (सर्वविद्) नाम है १२५ जगत के प्रकाशक होने से आपका (भानु) नाम है १२६ सर्वत्र रक्षणीय जीव आपके रहते हैं इससे आपका (विष्वक्सेन) नाम है १२७ निज भक्त द्वेषी जनों को अर्दन करते हो यासे आपका (जनार्दन) (१) नाम हैं १२८ सबके जानने वाले अथवा वेदमूर्ति होने से आपका (वेद) नाम है १२९ वेद के जानने वाले हैं यासो आपका (वदवित्) नाम है १३० शिक्षा व्याकरणादि अंगो से हीन हो यासों आपका (अव्यंग) नाम है १३१ अनन्त शाखा वाला वेद आपका अंग है इससे आपका (वेदांग) नाम नाम है १३२ वेदों से आप जाने जाते हो या वेदाभिप्रायों को आपही जानते हो यासों आपका (वेदवित्) नाम है १३३ और उन वेदों के देखने वाले या कहने वाले होने से आपका (कवि) नाम है १३४ ॥ १४ ॥

लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः ।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥ १५ ॥

अर्थ—सब लोकों के नियन्ता होने से आपका (लोकाध्यक्ष) नाम है १३५ इंद्रानि देवोंके अध्यक्ष होने से आपका (सुराध्यक्ष) नाम है १३६ श्रुति स्मृति विहित धर्म के नियामक होनेसे आपका [धर्माध्यक्ष] नाम है १३७ फिर प्रवृत्त निवृत भय विधधर्मरूप होनेसे आपका (कृताकृत) [२] नाम है १३८ वासुदेवादि चतुर्व्यूह रूप होने से आपका (चतुरात्मा) नाम है १३९ चार प्रकार के मूर्ति भेद होने से आपका [चतुर्व्यूह नाम है १४० महा पुरुष के ल-

---

[१] रक्षाप्रतिपक्षा न जनान अर्दयति

[२ नित्य फल प्रदत्वे नोपचारात् कृतः निर्वतक नित्यफल प्रदत्वेन अकृतः कृतश्च अकृतश्च कृताकृतः—

वाणा रूप चार दंष्ट्रा [दाढ़] होनेसे आप का [चतुर्दंष्ट्र] नाम है १४१ चार दिव्य-विग्रह होने से आप का [चतुर्भुज] नाम है १४२ ॥ १५ ॥

भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिःपुनर्वसुः॥२३॥

अर्थ—उपासकों को उक्त रूप से प्रकाश करते हो इस्से आप का [भ्राजिष्णु] नाम हैं १४३ उन भक्तजनों सो सुखसे अनुभव किये जातेहो इस्से आपका [भोजन] नाम १४४भक्त जन निवेदित को अमृतवत अंगीकृत करनेसे आपका [भोक्ता] नाम है १४५ भक्त कृता पराधोंके सहन शील होनेसे [सहिष्णु] नाम है १४६ सब जगतों की आदि में होनेसे आप का [जगदादिज] नाम है १४७ जगत में वर्तमान होकर भी तज्जन्य दोष स्पर्श रहित होने से आप का [अनघ] नाम है १४८ विशेष कर सर्वोत्कृष्ट रहने से आप का [विजय] नाम है १४९ धर्म प्रतिपक्षों की जय करने से आप का [जेता] नाम है १५० इस विश्व के उत्पत्ति के कारण होनेसे आपका [विश्वयोनि] नाम है १५१ ब्रह्मादि जीवोंमें बसने से या पुनर्वसु नक्षत्र रूप होनेसे आपका [पुनर्वसु] [१ नाम है १५२॥१६॥

उपेंद्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः ।
अतीन्द्रःसंग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमोयमः ।१७

अर्थ—अदिति मातामें जन्म लेनेसे आपका [उपेन्द्र] नाम है [इंद्र स्याप्यनुजत्वेन जातश्चो पेंद्र उच्यते] १५३ [सवामनो दिव्य शरीर धृक] इस श्रुति कथनानुसार आप का [वामन]

[१] पुनः पूर्वाद्वस निवासे इत्य स्माद्धातोः उः प्रत्ययः ।—

नाम है १५४ व्यक्तमान् होनेसे आपका [प्रांशु] [१] नाम है १५५ कोई कृत्व आप का व्यर्थ नहीं हैं इस्से (अमोघ) नाम है १५६ जगत के शोधक नाम होने से आपका (शुचि) नाम है १५७ उर्जा बल अपरिमित होने से आपका (ऊर्जित) नाम है १५८ इन्द्र का भी ऐश्वर्य आप के आगे तुच्छ होने से आप का (अतीन्द्र) नाम हैं १५६ अयत्न से ही भक्तों करके ग्रहण किये जाते हो इससे आप का (संग्रह) नाम है १६० जो रचा जाता है वो सब आप का ही रूप है इस्से आपका (सर्ग) नाम है १६१ यावन्मात्र जीवों को आप धारण करते हैं इस्से (धृतात्मा) नाम है १६२ जगतको बश में करने से आप का (नियम) नाम है १६३ दुष्टों को दंड देने से आप का (यम) नाम है १६४ ॥ १७ ॥

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः ।
अतीन्द्रियो महामायो महात्साहो महाबलः॥१८॥

अर्थ—सबों को जानने लायक होने से आपका [वेद्य] नाम है १६५ संसार के जन्म मरण रूप रोग निवृत्ति करने वाले हो इस्से आप का (वैद्य) नाम है १६६ सब समय योग युक्त होने से आप का (सदायोगी) नाम है १६७ सब भक्ति प्रतिपक्षी वीरों के मारने वाले होने से आप का (वीरहा) नाम है १६८ माया शक्ति के नियंता होने से या मौन और ध्यान के नित्य योग होने से आपका (माधव) नाम हैं १६६ लब्ध विद्य भक्तों को अत्यंत मधुर लगने से आपका (मधु) नाम है १७० इंद्रिय वृत्तिओं से पर होने से आपका (अतीन्द्रिय) नाम है ॥ ७१ ॥

---

(१) खरु शरु शंक शुपीयुनी लशुलिगुरित्यादिउणादौ नियातः प्रकर्षेण अंशु

प्रपन्न निखिल जीवों की मोह करने वाली चिक की तरह स्वरूप ढकने वाली माया नाम शक्ति वाले होने से आपका] महामाय] नाम है १७२ भक्तरक्षण में सब समय अत्युत्कंठित रहने से आपका [महोत्साह] नाम है १७३ निरपेक्ष महाबल होने से आपका [महाबल] नाम है १७४ ॥ १८ ॥

महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः ।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ।१६।

संशय बिपर्यासादि दोष रहित बुद्धि होने से आपका [महाबुद्धि] नाम है १७५ हेतु के विद्यमान होते भी आकृत महत बल होने से आपका (महावीर्य) नाम है १७६ भक्त रक्षणमें अलौकिक शक्ति मत्व होने से आपका [महाशक्ति] नाम है १७७ अन्य ते-जोऽनपेक्ष महती सूर्यादिकों की द्युति रूप होने से आपका [महा-द्युति] नाम है १७८ ये ऐसा है इस प्रकार नहीं निर्देश करने लायक श्री अंग होने से आपका [अनिर्देश्यवपु] नाम है १७९ उस अंग के अनुरूप दिव्य भूषण नित्य सपत् [शोभा] होने से आपका [श्रीमान्] नाम है १८० अपरिनेय आत्मा [स्वभाव] होने से आपका [अमेयात्मा] नाम है १८१ मंदर पर्वत को कच्छुप रूप धारण करने से आपका [महाद्रिधृत् (क्) नाम है १८२ ॥ १६ ॥

महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतांगतिः ।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदांपतिः २०

मनके हरने वाले वो रावणादिक का वध करने वाला शार्ङ्ग धनुष होनेसे आपका (महेश्वास) नाम है १८३ भूमिका भरण करने वाले होनेसे आपका [महीभर्ता] नाम है १८४ समुद्र मथनोद्-

भूत लक्ष्मी के नित्ययोग से आपका (श्रीमान) नाम है १८५ भक्तों के सर्वोत्कृष्ट आश्रय होनेसे आपका [सतांगति] नाम है १८६ अपराजित चेष्टा होनेसे आपका [अनिरुद्ध] नाम है १८७ अपने चरित्रोंसे देवोंके आनन्द दायक होनेसे आपका [सुरानन्द] नाम है १८८ भक्तोंके स्तुति वाक्योंके जानने से आपका [गोविंद] नाम है १८९ वेद लक्षण वाणी के जानने वाले वेदांतीयों के पति होनेसे आपका [गोविंदा पति] नाम है १९० ॥ २० ॥—

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुज गोतमः ।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः।२१।

भक्तोंको प्रकाशित निर्मल रूप होनेसे आपका [मरीचि] नाम है १९१ अपनी कांति मंदाकिनी प्रवाह से संसार ताप के दमन करने से आपका [दमन] नाम है १९२ मनोहर गतिसे वा शोभन वेद पक्ष होनेसे आपका [हंस] नाम है १९३ संसार के पार लगाने आपका [सुपर्ण] नाम है १९४ अनन्त भोग पर्यंक (पलंग) होनेसे आपका (भुजगोत्तम) नाम है १९५ प्रकाश बहुल गंभीर होने से आपका [हिरण्यनाभ] नाम है १९६ भक्त प्रति पक्षों के ताप देनेसे आपका (सुतपा) नाम है १९७ लोक पद्म नाभि में होनेसे आपका [पद्म नाभ] नाम है १९८ नैमित्तिक सृष्टिमें उत्पन्न की ब्रह्मादि प्रजाके पालन करने वाले होनेसे आपका (प्रजापति) नाम है १९९ ॥ २१ ॥

अमृत्युः सर्वदृकसिंहःसन्धाता सन्धिमान्स्थिरः ।
अजो दुर्मर्षणःशास्ता विश्रुतात्मासुरारिहह २२

और मृत्युके भी मृत्यु रूप होनेसे आपका (अमृत्यु) नाम है

२०० इति द्वितियम् शतकं व्याख्यातम द्वितियम् शतकम् समाप्तम् ।।

अथ तृतीय शतक प्रारम्भ :

अनुकूल प्रतिकूल और तटस्थ इन सबों को यथा योग्य देखने सो आपका (सर्वदृक) नाम है २०१ नृसिंह रूप होने से आपका (सिंह) नाम है २०२ प्रहलादि भक्तों को धारण करने से (संधाता) नाम है २०३ उन भक्तों से नित्य संधि विद्यमान होने से आपका (संधिमान) नाम है २०४ फिर उन भक्तों के अपचार को देखकर भी कभी मन नहीं हटानेसे आपका (स्थिर) नाम है २०५ खंभ से उत्पन्न होने से अन्यवत पितृ द्वार से नहीं उत्पन्न हुये हो इस्से आपका (अज) नाम है २०६ शत्रु जन आप के कोप को तथा पराक्रम को नहीं सह सकते इस्से [दुमर्षण] नाम है २०७ इस प्रकार दुष्ट जनों के शासन करने वाले होने से आपका [शास्ता] नाम है २०८ सर्वत्र सब समय विख्यात पराक्रम होने से आपका (विश्रुतात्मा)नाम है २०९ देवशत्रुओं के मारने वाले होनेसे आपका[सुरारिहा] नाम है २१० ॥ २२ ॥

गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः ।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः २३

अशेष विद्याचार्य होने से आपका [गुरुर्गुरुतम] नाम है २११ मत्स्यावतार रूपसे चराचर बीजाधार होनेसे आपका [धाम] नाम है २१२ सत्यव्रतादि सत पुरुषों से साधु [योग्य] होनेसे आपका [सत्य नाम है २१३ कपट रहित हैं उन्हीं सतों में पराक्रम

हो इससे आपका [सत्यपराक्रम] नाम है २१४ सज्जनों के विरोधियों को कभी नहीं देखने से आपका [निमिष] नाम है २१५ सज्जनों को सब समय कृपा कटाक्ष से देखते हो इससे आपका [अनिमिष] नाम है २१६ नित्य वैजयंती के योग से आप का [स्रग्वी] (१) नाम है २१७ वेद वाणी उपग्रहण करने वाले होने से आपका (वाचस्पति) (२) नाम है २१८ इस तरह अपने उपजीव्यों के सर्व प्रकार जानने से आपका (उदारधी) नाम है २१९ ॥ २३ ॥

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान् न्यायो नेता समीरणः
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥२४॥

अपने निरपेक्ष भक्तोंको अग्र (उत्कृष्ट) पद प्राप्त करने से आपका (अग्रणी) नाम है २२० जन समूह को पालन करने से आपका (ग्रामणी) नाम है २२१ इस अलौकिक शोभा से नित्य युक्त होने से आपका (श्रीमान्) नाम है २२२ उनको उचित फल देने से आपका (न्याय) नाम है २२३ भक्ताभीष्ट दान से आपका (नेता) नाम है २२४ भक्तन के इच्छानुसार आचरण करने से (समीरण) नाम है २२५ यहाँ मूर्धपद उप लक्षण है इससे भक्तरक्षणार्थ है असंख्य मूर्द्धादि भुजादि धारण करने से (सहस्र मूर्द्धा) नाम है २२६ अंतर्यामि रूपसे विश्व व्याप्त होने से आपका (विश्वात्मा) नाम है २२७ हजारो नेत्र होनेसे आपका [सहस्राक्ष] नाम

---

(१) अस्मा माया मेधास्रजोविनिः इति नित्ययाग विनिः प्रत्ययः (२) पातेर्डतिः वच्परि भाषण क्विब्यचि. दीर्घोऽसं प्रसारणम षष्ठाया पुत्रपति पृष्ठपारपदप्यः पोषेषुच इतिषष्ठी विसर्गस्यापि छांदसि सकारः षष्ठीयुक्तः छदसि वा इति वाधित्वापत्तेतत्कार्यम्

है २२८ हजारों वरण होने से आपका (सहस्रपात्) नाम है २२६ ॥ २४ ॥

आवर्तनो निवृतात्मा संवृतः संप्रमर्दनः ।
अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ॥२५॥

अर्थ—संसार घटी चक्रके घुमाने वाले होने से (आवर्तन्) नाम है २३० त्रिपाद विभूति रूप होने के कारण संसार की विभूति से निबृत्त हो इससे आपका (निबृत्तात्मा) नाम है २३१ मूढ़ तमोगुणी पूरुषों को गुप्त रहने से आपका [संवृत] नाम हैं २३२ स्वरूपाच्छादक तमोगुणीओं को नाश करने से आपका (संप्रमर्दन) नाम है २३३ दिवसोपलक्षिय कालचक्र के चलाने वाले होनेसे आपका (अहः संर्वतक) नाम है २४३ जठरागिन रूप हो विश्वके प्राप्त करने से आपका (वहनि) नाम है २३५ वायु रूप से सबके प्रेरिक होने से आपका (अनिल) नाम है २३६ भूमिगत सहित भूमि के धारण करने से आपका (धरणी धर) नाम है २३७ ॥ २५ ॥

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृक् विश्वभुविः ।
संस्कर्ता सत्कृतः साधुजह्नुर्नारायणो नरः॥२६॥

निज भक्तों को सदां प्रसन्न रूप से दर्शन देनेसे आपका (सुप्रसाद) नाम है २३८ पूर्ण समस्त काम होनेसे आपका (प्रसन्नात्मा) नाम है २३६ विश्वको आपही सृजते हो या से आपका (विश्वसृष्टि) नाम है २४० विश्वको रचकर पालन करने से आपका (विश्वभुक्विभुः) नाम है २४१ सज्जन जनों को सत्कार करने से आपका (सत्कर्त्ता) नाम है २४२ भक्तजनों से! आत्म निवेदन करने से सत्कार किये गये हो इससे आपका (सत्कृत

नाम है २४३ भक्ताभीष्ट सिद्ध करने से आपका (साधु) (१) नाम है २४४ अभक्तों को अपने माहात्म्य के छिपाने से आपका (जह्नु) २ नाम है २४५ नर समुह में अथवा तत्व गणमें अन्तर्यामि से निवास करनेसे अथवा प्रलय जलमें शेषशायी रूप से निवास करते हो इससे आपका (नारायण) नाम है २४६ कभी भी क्षय नहीं होने से आपका (नर) नाम है (रः क्षयो यस्य नह्यस्ति नरः समुदाहृतः) २४७ ॥ २६ ॥

असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छूचिः ।
सिद्धार्थः सिद्ध संकल्पः सिद्धिदःसिद्धिसाधनः २७

अर्थ—वो जीवों के असंख्यात् रूप होने से आपका (असंख्येयात्मा) नाम है २४८ उन सबों में अंतर्यामि रूप से रहने से (अपेयात्मा) नाम है २४६ तदनपेक्ष्य विलक्षण रूप होनेसे आपका (विशिष्ट) गाम है २५० अपने सम्बन्ध सों उन जीवों को अपने समान करने से आपका [सिष्टकृत] नाम है २५१ शुद्ध स्वरूप होने से आपका (शुचि) नाम है २५२ स्वतः पूर्ण काम हो स्वेच्छासे ही मनके विचार सिद्ध होने से आपका (सिद्धार्थ) नाम है २५३ सत्य काम सत्य संकल्प होने से आपका (सिद्ध संकल्प) नाम है २५४ साधकों को अणिमादि सिद्धिया देने से आपका [सिद्धिद] नाम है २५५ उस सिद्धिके हेतु [कारण] होने से आपका [सिद्धिसाधन] नाम है २५६ ॥ २७ ॥

---

(१) कृ वा पा जिमि साधि इत्यादिना साधोधातोरुरमप्रत्ययः
(२)अभक्तेषु आत्म माहात्म्यं अयह्नुत इति जह्रा तद्दंत णोपश्चेत्युणादिनुः प्रत्ययः

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः ।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः॥२८॥

अर्थ–अखिल मंगलार्पण दिन रूप होनेसे आपका (वृषाही) नाम है २५७ संसार ताप तप्तन को कामों को बर्षाने वाले होने से आपका (बृषभ) नाम है २५८ आपके बिन कोई जगज्जातनहीं है इससे आपका (विष्णु) नाम है २५९ वर्णाश्रम बिहित धर्म आपकी प्राप्ति के साधन है इससे आपका (बृषपर्वा) नाम है २६० आराधन करने वालोंकी दोनी यथा प्राप्त हवि को स्वीकार करने से आपका (बृषोदर) नाम है २६१ फिर उन्हीं आराधकों को माता की तरह बढ़ानेसे आपका (बर्धन) नाम है २६२ फिर उन्हों अपने आराधकों को बढ़ावते आप भी बढ़ें हैं यासो आपको (बर्धमान्) नाम है २६३ सब लोक से न्यारे होकर अपने भक्तन के अनुबृत्त रहने से आपका (बिविक्त (नाम है २६४ वेदकी श्रुतियों के पर्यंवसान (समाप्त) भूमि होने से (श्रुतिसागर) नाम है २६५ ॥ २८ ॥

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः ।
नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्ट प्रकाशनः ॥ २९ ॥

प्रपन्न जनोंके बोझ उठानेका सुशोभित भुज होनेसे आपके (सुभुज) नाम है २६६ जिन भुजा के बल से शत्रुजन आपके वारण करने में समर्थ नहीं होते हैं इससे आपका (दुर्धर) नाम है २६७ फिर अत्युत्तमवाणी होने से आपका (बाग्मी) नाम है २६८ इस प्रकार पूज्य परमेश्वर्य युक्त होने से आपका (मन्हेद्र) नाम है २६९ वांछित धन देने सों आपका (वसुद) नाम है २७० भक्तन के आप ही धन हो यासे (बसु) नाम है २७१ भक्तजनों के अभीष्ट अनेक

रूप धारण करनेसे आपका (नैकरूप) नाम है २७२ बड़ा भारी रूप होनेसे आपका (बृहद्रूप) नाम है २७३ शिपिजेरिश्म वे आपमें प्रवेश करे हैं इससे अथवा शिपि जो यज्ञ पशुता में जो प्रवेश करै यासे आपका [शिपिविष्ट] (१) नाम है २७४ इसी दिव्य निज रूपको अर्जुनादि भक्तोंको प्रकाश करने से आपका (प्रकाशन) नाम है २७५ ॥ २६ ॥

ओजस्तेजो द्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः ॥
ऋद्धःस्पष्टाक्षरो मंत्रश्चन्द्रांशु भास्करद्युतिः ३०

ओज (असाधारणसामर्थ्य) तेज (पराभिभवसामर्थ्य) अर्थात शत्रु जन के तिरस्कार करनेकी सामर्थ्य और द्युति (उज्ज्वलता) इन तीनोंके धारण करने सों आपका (ओजस्तेजोद्युतिधर) नाम है २७६ प्रकाश रूप होनेसे आपका (प्रकाशात्मा) नाम है २७७ दुष्टन को अतिशय ताप देनेवाले हो इस्से आपका (प्रतापन) नाम है २७८ पूर्णमासी के समुद्र की तरह निरन्तर बढ़ने से आपका (ऋद्ध) नाम है २७९ स्पष्ट किये वेद के अक्षर जिससे अर्थात वेद अक्षरों के स्पष्ट करने वाले होने से आपका (स्पष्टाक्षर) नाम है २८० वेदाक्षरों को प्रमाण मानने वालों के रक्षा करने वाले हो इससे आपका (मन्त्र) [२ नाम है २८१ वेदाक्षरों के मानने वालों को चंद्रमा की की तरह आल्हाद देते हो इससे आपका (चन्द्रांशु) नाम है २८२ शत्रुओं के परिभव करने वाला तेज होने से आपका भास्करद्युतिः नाम है २८३ ॥ ३०

---

(१) शिपि यज्ञ पशु तस्मिन बिशतीति

(२) मंतारं त्रायते इति त्रैङ् पालने आदे च इति आत्वम् ॥ आतोमुसपर्गेकः अल्लोपः

अमृतांशूद्भवो भानुः शशिविन्दुः सुरेश्वरः ।
औषध जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥ ३१॥

सर्व—तापहर अमृत किरण रूप चंद्रमा मनसे उत्पन्न हुआ है इससे आपका (अमृतांसूद्भव) नाम है २८४ सूर्य के प्रकाश रूप हो इससे आपका (भानु) नाम है २८५ कुटिल गति वालों के विध्वंश करने वाले होने से आपका (शशिविन्दु) नाम है शशः प्लुगतिः प्रोक्तो विंदुस्तस्य निवर्तकः कौटिल्य गति विध्वंसी शशविन्दुः उदाहृतः इति २८६ ऋजुर्गति वाले सुर (देवों) को पालन करने से आपका (सुरेश्वर) नाम है २८७ भव रोग (जन्म मरण) के निवर्तक होने से आपका (औषध) ताप है २८८ इसी से जगत के पार लगाने वाले हो इससे आपका (जगत-सेतु) नाम है २८९ आपके धर्म और पराक्रम सत्य होने से [सत्यधर्म पराक्रम] नाम है ॥ २९० ॥ ३१ ॥

भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः ।
कामहा कामकृत्कान्तःकामःकामप्रदःप्रभुः॥३२॥

भूतभविष्यद्वर्तमान तीनों कालों में अखंड एक रस स्वाम्य होने से (भूतभव्यभवन्नाथ) आपका नाम है २९१ सदा सर्वत्र स्वभाव से ही पवित्र करने वाले होने से आपका (पवन) नाम है २९२ गंगादि पवित्र करने वालों के प्रेरक होने से आपका (पावन) नाम है २९३ भक्तोंपर अनुग्रह करते कभी तृप्त नहीं होने से आपका (अनल) नाम है (अपर्याप्तोहिभक्तेभ्यो ह्युपकृत्पुनः पुनः सो नलः परिकीर्तिन इति) २९३ अपने भक्तों की स्वर्गादि भोगेच्छा के निवर्तक होनेसेआपका(कामहा)नामहै२९५उनभक्तोंके अभीष्टकामोंको

अथाचि पूर्ण करने से आपका (कामकृत) नाम है २६६ सौन्दर्य सांकुपार्यादि गुणों से उनके अतिप्रिय लगने से आपका (कांत) नाम है २६७ अतिशयकमनीय (सुन्दर) होनेसे आपका (काम) नाम है २६८ स्वकाम तथा क्षुद्र कामना वालों को तथा योग्य कामों के दान करने से आपका (कामप्रद) नाम है २५६ इसीसे सर्व प्रकार समर्थ होने से आपका (प्रभु) (१) नाम है ३००

अथ चतुर्थ शतकप्रारम्भः

युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः ।
अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥ ३३ ॥

युगांत होनेपर फिरभी युगोंकी व्यवस्था के प्रवर्तक होने से आपका (युगादिकृत) नाम है ३०१ धर्म व्यवस्था से युगों के घुमाने से आपका (युगावर्त) नाम है ३०२ शिशुरूप धारण मुखमें विश्वदर्शनादिक अनेक प्रकार माया दिखाने से आपका (नैकमाय) नाम है ३०३ निखिल जगतका निगल जाना रूप महत् अशन होने से आपका (महाशन) नाम है ३०४ अभक्तों को चिन्तन करने परभी दर्शन नहीं होने से आपका (अदृश्य) नाम है ३०५ शरणागतों को सर्वत्र दर्शन देने से आपका (व्यक्तरूप) नाम है ३०६ हजारयुग कल्पांतपर्यन्तशयन करते हुये भी लोकोत्तर जय करने से आपका (सहस्रजित) नाम है ३०७ किसी प्रकारसे आपकी महिमा का पार नहीं पाने से आपका अनन्तजित नाम है ॥

---

(१) विप्र शंभ्वोड्व संज्ञायाम् इति भूसत्तायाम् इति भू धातो डुः प्रत्ययः

इष्टो विशिष्टः शिष्टेष्टः शिखंडी नहुषो वृषः ।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्ववाहुर्महीधरः ।३४।

माता की तरह सबको अपेक्षित होनेसे आपका (इष्ट) नाम है ३०९ आपसे कोई किसी तरह अधिक नहीं है इस्से आपका (अविशिष्ट) नाम ३१० ब्रह्मारुद्रादि दैवतसनत्कुमारवशिष्ठ आदि शिष्टों को इष्ट होनेसे आपका (शिष्टेष्ट) नाम है ३११ अपरिति तेज शिखंड (लट) होने से आपका (शिखंडी) नाम है ३१२ स्वमायासे जीवोंके बन्धन करनेसे आपका (नहुष) (१) नामि है ३१३ संसाराटवी भ्रमण से खेदित जीवोंको सेवन करनेसे आपका (वृष) नाम है ३१४ परुशराम, (अर्थात परशुरामजी के पक्ष में नाम कहें हैं) काश्यप प्रार्थनानृपति निरासकर क्रोध के त्यागने से आपका (क्रोधहा) नाम है ३१५ क्षत्रियां पर क्रोध करने से (क्रोधकृत) नाम है ३१६ उसी क्रोधसे सहस्रार्जुन के छेदन करने से आपका (कर्ता) नाम है ३१७ विश्वकल्याण कारक आपके भुजदंड होनेसे (विश्ववाहु) नाम है ३१८ भार उतार कर भूमि धारण करने से आपका (महीधर) नाम है ३१९ ।

अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
अपांनिधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥ ३५ ॥

अपने सदा एकाकार ऐश्वर्य होने से आपका (अच्युत) नाम है ३२० अप्रच्युतैश्वर्यविख्यात होने से आपका (प्रथित) नाम है ३२१ पुरुषोंके जीवित रूप होनेसे आपका (प्राण) नाम हैं ३२२

---

(१) शिष्टाना मपि इष्टः वा शिष्टै रिष्टः इतिः

सब प्राणी मात्रको (बल) देनेवाले हो इससे आपका (प्राणद) नाम है ३२३ अमृतार्थी इन्द्रको अमृतविधान करके आपके इंद्रके पीछे उत्पन्न होनेसे आपका (बासवानुज) नाम है ३२४ मथ्यमान समुद्र में प्रवेश करनेसे आपका (अपान्निधि) नाम है ३२५ भ्रमण करते मन्दिर पर्वत के धारण करने से आपका (अधिष्ठान) नाम है ३२६ एवं विध। ऐसे भक्तोंकी रक्षामें सदा प्रवृत्त रहने से आपका (अप्रमत्त) नाम है ३२७ आप अन्यान्यपेक्ष होकर अपनी महिमा में सदा स्थित रहने से आपका (प्रष्ठित) नाम है ॥३२८॥३५॥

स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरंदरः ॥ ३६ ॥

आप असुरनको पोषण करोहो इस्से आपका (स्कंद) नाम है ३२९ सुर सेनापति को भी आप धारण करते हो इससे आपका (स्कन्धर) नाम है ३३० लोकधर के उठाने से आपका (धुर्य) नाम है ३३१ वाँछित वरों के देने से आपका (वरद) नाम है ३३२ जगृत्प्राण वायुके बहाने वाले होने से आपका (वायुवाहन) नाम है ३३३ सब भूतों में वसता अथवा सब भूतों को अपने में वास कराता जो प्रकाश करता है इससे आपका (वासुदेव) नाम है ३३४ बहुतसी भानु (प्रकाशक) किरण होने से (बृहद्भानु) आपका नाम है ३३५ सब के अनादि सिद्धदेव होनेसे (आदिदेव) नाम है ३३६ त्रिपुर के पुरों के बिदीर्ण करने से आपका (पुरन्दर) (१) नाम है ३३७।३६

---

(१) वाचं यम पुरंदरौच इति निपातनात् मुम् ॥

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः ।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥३७॥

आध्यात्मिक शोकमोहाशनापिपासादि रहित होने से आपका (अशोक) नाम है ३३८ इसी तरह वैरि चौर व्याध्यादि भौतिक भय के पार लगाने वाले होने से आपका (तारण) नाम है ३३९ स्मरण मात्र से संसार के भय से पार लगाते हो उससे आपका (तार) नाम है ३४० शत्रु जनोंके मारने में समर्थ होनेसे आपका (शूर) नाम है ३४१ शूर राजाके बंश में जन्म लेने से आपका शौरि नाम है ३४२ भक्तजनों के रक्षण करने में समर्थ होनेसे आपका (जनेश्वर) नाम है ३४३ निसर्ग महत्व होने पर भी भक्तजनोंसे प्रतिकूलनहोनेसे आपका (अनुकूल)नामहै ३४४असंख्य ऐश्वर्यहोनेसे आपका(शतावर्त) नाम है ३४५ लीला कमल के सब समय धारण करने से आपका (पद्मी) नामहै ३४६ अमल नीलकमलके समान नेत्र होनेसे आपका (पद्म निभेक्षण) नाम है ३४७।३७

पद्मनाभोऽरविंदाक्षः पद्मगर्भो शरीरभृत् ।
महर्द्धिरृद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुड़ध्वजः॥३८॥

कमल के तुल्य नाभि होनेसे आपका (पद्मनाभ) नाम है ३४८ अर विंद के समान कृपामृत वर्षाने वाले नेत्र होने से आपका (अरविंदाक्ष) नाम है ३४९ योगि जनों के हृदय कमलमें निवास करने से आपका (पद्मगर्भ) नाम है ३५० अपने शरीर के समान उपासकनको पोषण करते हो यासों आपका (शरीरभृत्) नाम है ३५१ भक्तों की योगक्षेम करने वाली बिभूति मत् होने से आपका (महर्द्धि) नाम है ३५२ उन भक्तों की ऋद्धि (बढ़वार)से

आप समृद्ध हैं इस से आपका (ऋद्ध) नाम है ३५३ सर्वाधिक स्वरूप होने से आपका (वृद्धात्मा) नाम है ३५४ ले चलने से रथांग के बराबर होने से त्रयी मय गरुड़ रूप महत् अक्ष होने से आपका (महाक्ष) नाम है ३५५ वोही गरुड़ की ध्वज होने से आपका (गरुड़ध्वज नाम है ३५६ ॥ ३८ ॥

अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिंजयः ३९

अर्थ—कोई आपके साम्यको आपसे दूसरा नहीं पाता है इससे (अतुल) नाम है ३५७ अपने आज्ञोल्लंघि पुरुषों के शिक्षा देने वाले हो इससे आपका (शरभ) (१) नाम है ३५८ उन्हीं आज्ञोल्लंघियों को भय रूप शिक्षा करते हो इससे आपका (भीम) नाम है ३५९ सत प्राणी मात्रके उन्नति के समय के जानने वाले होने से आपका (समयज्ञ) नाम है ३६० यज्ञगत हवि के हरने से वा स्मरण करने वालों के पापों के हरने से आपका (हविर्हर) नाम है ३६१ सब लक्षणों से लक्षण जानने वालों में आप बहु योग्य हो इस से आपका (सर्वलक्षण लक्ष्य) नाम है ३६२ इसी तरह नित्य लक्ष्मी जी से संयोग होने से आपका (लक्ष्मीवान् नाम है ३६३ कभी किसी प्रकारसे किसी तरह के संग्राम आप हराते नहीं हो इस से आपका समितिंजय नाम है ३६४ ॥ ३९ ॥

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः ।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥४०॥

---

(१) शाहसायम् इत्यस्मात् कृश्च शालि कलिगर्दिभ्योऽभच् इति अभ ब

अर्थ—भक्तों से स्नेह कभी कम नहीं होने से आपका विस्तार(१) नाम है ३६५ कमलगर्भ के समान आप श्री० अंगकांति होने से रोहित नाम है ३६६ उपाकजनों से ढूँढ़ने योग्य होने से आपका मार्ग (२) नाम है ३६७ उनके बांछितार्थ प्राप्तिके लिये कारण होने से आपका (हेतु) नाम है ३६८ यशोदाजी ने बन्धन किये तब उदर में रस्सी धारण करने से आपका (दामोदर) नाम हैं ३६९ यशोदा कृत बन्धन तर्जन (धमकाने) के सहने से आपका (सह) नाम है ३७० पृथ्वी को अपनी सत्ता से धारण करनेसे आपका (महीधर) नाम है ३७१ सत्यभामा रुक्मिणी जांबवत्यादि के स्वयम्बर के महाभाग होने से आपका महाभाग नाम है ३७२ वाल्य में भी दुर्वार परमेश्वर्य होने से वेगवान् नाम है ३७३ अपरिमि नैवेद्य के गोवर्धन रूप से अशन भोजन करने से आपका (महाशन) नाम है ३७४ ॥ ४० ॥

उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥४१॥

संसार निवर्तक होने से (उद्भव) नाम है ३७५ भक्त प्रतिपक्षीन के क्षोभ कराने वाले होने से आपका क्षोभण नाम है ३७६ अपनी माया से जीवोंको बाँधकर उनसे क्रीड़ाकरनेसे आपका (देव) नाम है ३७७ क्रीड़ा भोग साहित्य होने से गर्भकी तरह बढ़ाने योग्य लक्ष्मी के होने से (श्रीगर्भ) नाम है ३७८

---

(१) उक्तस्ने हस्यात्तरणात् विस्तरणात् विस्तरः परिकीर्तितः
(२) मार्ग अन्वेषणे आधृषीयः आधृद्वा इति वाणिचि अकर्तस्वि-कारके इति संज्ञायां इति कर्मणिघञ

इसीसे आपका (परमेश्वर) नाम है ३७९ जीवोंको स्वप्राप्ति में कारण होने से आपका (करण) नाम है ३८० सब विश्वके कारण होने से आपका (कारण) नाम है ३८१ सृष्टयादि करने में स्वतंत्र होने से आपका (कर्ता) नाम है ३८२ उनके फल भोगों के देखने से विकारवान होने से आपका (विकर्ता) नाम है ३८३ आपके स्वरूप जानने में कोई समर्थ नहीं हो सकता इससे आपका (गहन) नाम है ३८४ सब भक्तों का तथा विश्वका रक्षण करने से आपका (गुरु) नाम है ३८५ । ४१

व्यवसायो व्यवस्थानःसंस्थानःस्थानदो ध्रुवः ।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टःशुभेक्षणः ॥ ४२ ॥

ज्योतिष चक्र में धुरू के बन्धन करने वाले होने से आपका (व्यवसाय) नाम है ३८६ उस ज्योति श्चक्र के आश्रय होनेसे आपका (व्यवस्थान) नाम है ३८७ ये सब आप में ही समाप्त होता है इससे आपका (संस्थान) नाम है ३८८ परंपद रूप स्थान के देने वाले होने से आपका (स्थानद) नाम है ३८९ धुरू को ध्रुव करने वाले होने से आपका (ध्रुव) नाम है ३९० सर्वोत्कृष्ट ऋद्धिवान् होने से आपका (परर्द्धि) नाम है ३९१ भागवतों को प्रत्यक्ष दर्श देने से आपका (परमस्पष्ट) नाम है ३९२ कभी किसी वस्तु की अपेक्षा नहीं होने से आपका (तुष्ट) नाम है ३९३ इस प्रकार महा गुणों से पूर्ण होने से आपका (पुष्ट) नाम है ३९४ शीतल विशालराजीववत् नेत्र वाले होने से आपका (शुभेक्षण) नाम है ३९५ ॥ ४२ ॥

रामो विरामो विरजो मार्गो नयोनयोऽनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ।४३।

अपने गुणों में सदा रमण करने से योगिजनों के रमण स्थान होने से आपका (राम) नाम है ३९६ सर्व विश्वके लय स्थान होने से आपका (विराम) नाम है ३९७ स्वाभाविक निरपेक्ष होने से आपका (विरत) (१) नाम है ३९८ वाल्मीकि भरद्वाजादिकों से अन्वेषण किये जाते हो इससे आपका (मार्ग) नाम है ३९९ वास्तव में यहाँ (विरजो मार्ग) ऐसा पाठ होने से निर्दोष जनों से आप ढूँढे जाने से आपका (विरोजोमार्ग) नाम है ये एकही नाम है ३९८ सुहृदजनों करके नियोग (हुक्म करने लायक ही होने से आपका (नेय) नाम है ३९९ तपो धनों के प्राप्य स्थान होने से अथवा साक्षात् नीति रूप होने से आपका (नय) नाम है ४००

इति चतुर्थ शतकं व्याख्यातम् समाप्तम् ॥

अथातः पंचमं शतकं व्याख्यायते

वाहिमुखों से नयके नहीं होने से आपका [अनय] नाम है ४०१ असह्य वाणों के चलाने वाले होने से आपका [वीर] [२] नाम है ४०२ अलौकिक शक्तियुक्त होने से आपका [शक्तिमतां श्रेष्ठ] नाम है ४०३ अभ्युदय तथा निश्रेयस इन दोनोंसे सबके

---

[१] विरजोइति पाठांतरम् तत्र मायारूप रजो रहत इति

[२] अजगति क्षेपणयोः इति अज धातोः स्फाति तञ्चिवञ्चि इत्यराणादिरक् प्र० अजेर्व्यघञपो रितित्री आदेशः कित्वाद्गुणाभावः ॥

साक्षाद्धारण करने से आपका (धर्म) नाम है ४०४ शरणागति धर्म के जानने वालों में उत्तम होने से आपका (धर्मविदुत्तम) नाम है ४०५।४३

वैकुंठः पुरुषः प्राणः प्राणदःप्रणवः पृथु ।
हिरण्यगर्भःशत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः४४

अर्थ—शरणागतसे फिर प्रथक नहीं होते अथवा परमधाम बैकुंठ में विराजमान होनेसे आपका (बैकुंठ नाम है ४०६ सबके पालन करने वाले होनेसे आपका (पुरुष नाम है ४०७ इसीसे सबके तृप्त करने से आपका (प्राण) नाम है ४०८ सिद्ध प्राणों के दान करने से आपका (प्राणद] नाम है ४०९ अपने द्विव्य गुणोंसे सब ब्रह्मादिकों को नवाते हो इस्से आपका (प्रणाम) नाम है ४१० यज्ञके विस्तृत होने से आपका (पृथु) नाम है ४११ परमनिधि की तरह भक्तों के हृदय में गुप्त निवास करने से आपका (हिरण्यगर्भ) नाम है ४१२ उन भक्तोंके कामादि शत्रुओं के हनन करनेसे आपका (शत्रुघ्न) नाम है ४१३ सबमें व्याप्त होने से आपका [व्याप्त] नाम है ४१४ भारद्वाज गुहादि भक्तों के दर्शन देनेको आप स्वयं जाने से आपका (वायु) नाम है ४१४ इंद्रियजन्म ज्ञान से पर होने से आपका (अधोक्षज) नाम है ४१६।४४

ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः ।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः४५

अर्थ—सर्वानन्द दायक गुणोंके प्राप्यस्थान होनेसे आपका (ऋतु) नाम है ४१७ मनोहर दर्शन होने से आपका (सुदर्शन) नाम है

४१८ प्रलयमें सब विश्व को अपने भीतर एकत्र करने से आपका (काल) नामहै ४१९ पर पदमें स्थितरहने से आपका(परमेष्ठी)नाम है ४२० भक्तोंके ग्रहण करनेसे आपका [परिग्रह] नाम है ४२१ दुष्ट जनोंपर परम प्रचंड होने से आपका (उग्र) नाम है ४२२ संवत्सर रूप होने से आपका (संवत्सर) नाम हैं ४२३ रावण कंसादि दुष्टों के बधमें प्रवीण होनेसे आपका (दक्ष) नाम है ४२४ भक्त जनों के विश्राम स्थान होने से (विश्राम) नाम है ४२५ अपकारियोंमें भी क्षमायुक्त होनेसे आपका (विश्वदक्षिण) नाम है ४२६।४५

विस्तार, स्थावरः स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् ।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ४६

अर्थ—युगांत समय में वेद विहितधर्मके कल्कि रूप धारण कर विस्तार करते हो इससे आपका (विस्तार) नाम है ४२७ इस प्रकार धर्म को स्थावर कर आप स्थिर होते हो इससे आपका (स्थावरस्थाणु) नामहै ४२८ हिताहित के उपदेष्टा होने से आपका (प्रमाण) नाम है ४२९ इसीसे कलियुगांत में पुनःधर्मांकुरके हरित करने से आपका (बीजमव्यय) नाम है ४३० सम्यग् ज्ञानि के प्रयोजन होने से आपका [अर्थ] नाम है ४३१ अल्प भाग्य अर्थार्थी मनुष्य निष्कपट होकर आपको प्रार्थना नहीं करते हैं तब उनको अनर्थ रूप होने से आपका [अनर्थ] नाम है ४३२ शंख पद्मादि निधि कोष [खजाना] होने से आपका [महाकोष] नाम है ४३३ अपरिमित भोग होने से आपका [महाभोग] नाम है ४३४ नहीं कहने योग्य अति कृपणों के देने योग्य धनहो इससे आपका [महाधन] नाम है ४३५ ॥ ४६ ॥

अनिर्विण्णः स्थविष्ठो भूर्धर्म्मयूपो महामखः ।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ।४७।

अर्थ—कभी किसी वस्तु की अपेक्षा नहीं है इससे आपका [अनिर्विण्ण] नाम है ४३६ अतिस्थूल होने से आपका [स्थविष्ठ] नाम है ४३७ सबकी आधार होने से आपका] भू] नाम है ४३८ धर्म रूप स्तम्भ होने से आपका [धर्मयूप] नाम है ४३९ धर्म रूप यज्ञावयव होने से आपका [महामख] नाम है ४४० ज्योतिश्चक्र के घुमाने से आपका [नक्षत्रनेमि] नाम है ४४१ उस नक्षत्र चक्र के धारण करने से आपका (नक्षत्री) नाम है ४४२ फिर उसी नक्षत्र मण्डल के धारण करनेमें समर्थ होने से आपका [क्षम] नाम है ४४३ वांतर प्रलय में नक्षत्रांतरो से क्षीण होकर स्थिर रहने से आपका (क्षाम) नाम है ४४४ सृष्टि समय में सबों को उनके कर्त्तव्य कामों में प्रेरणा करने वाले होने से आपका (समीहन) (नाम है ४४५ । ४७

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।
सर्वदर्शी विमुक्ताऽऽत्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ४८

अर्थ—इन्द्रादिकों के द्वारा आप पूजा पाने के योग्य होनेसे आप का (यज्ञ) (१) नाम है ४४६ केवल आप ही यजन करने योग्य है इससे आपका (इज्य) नाम है ४४७ अतिशय पूज्य होने से आपका (महेज्य) नाम है ४४८ पंच महायज्ञ सप्त हविर्यज्ञ इन सबसे आराधनीय होने से आपका (क्रतु) नाम है ४४९ सत्रमें सब समय आराधनीय होकर बिराजित होते हो इससे आपका (सत्र) नाम है ४५० निवृत्त प्रवृत्त धर्म निष्ठ सत पुरुषोंकी गति होने से आपका (सतांगति) नाम है ४५१ सब चेतना चेतन को देखते हो इससे आपका (सर्वदर्शी) नाम है ४५२ विषयों से रहित

(१) यज याच विछ प्रच्छ रक्षो नङ् इति जय धातो नङ् स्तोश्चुनाश्चुः ।

मन के होने से आपका (विमुक्तात्मा) नाम है ४५३ सबको जानते हौ यासे आपका (सर्वज्ञ) नाम है ४५४ सब प्राणि मात्रमें वैष्णव धर्म को जानते हौ इस्से आपका ४५६ (ज्ञानमुत्तम) नाम है ४५५ ॥ ४८ ॥

सुव्रतः(१)सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् ।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥४६॥

अर्थ—शरणागतरक्षण आपका व्रत है इससे आपका(सुव्रत)नाम है ४५६ प्रसन्न मनोहर मुख होने से आपका (सुमुख) नाम है४५७ (खंब्रह्म) रूप होनेसे आप अत्यन्त सूक्ष्म होनेसे (सूक्ष्म) नाम है ४५८ वेदरूप घोसरूपहो अथवा वेद जो है वोही आपका घोष है इससे आपका (सुघोष) नाम है ४५६ समाधि निष्ठ भक्त योगियों को परमसुख देने वाले हो इससे आपका (सुखद) नाम है ४६० सब प्राणिमात्र के कल्याणेच्छु होने से आपका (सुहृद) नाम है ४६१ इस प्रकार स्वाभाविक सुहृद भाव उनके मनको हरोहो इससे आपका (मनोहर) नाम है ४६२ क्रोधको आपने जीता है इससे आपका (जितक्रोध) नाम है ४६३ स्फुरत्कडाकंकण युक्तभुज होने से आपका (वीरबाहु) नाम है ४६४ अमृत पान कराते समय राहू केशिरश्छेदन करने वाले होनेसे आपका (विदारण) नाम है ४६५ ४६

स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत् ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥५०

अपना लोकोत्तर सौंदर्य से परवश कराने से आपका (स्वापन) नाम है ४४६ अपने बशमें अपने को रखनेसे अर्थात स्वतंत्र होने

---

(१) सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीतिचयाचते अभयं सर्व भूतेभ्यो ददाम्यतद्व्रतं मम इति व्रतं यस्यः

से आपका (स्ववस) नाम है ४६७ समुद्र मंदरगिरि वासुकि सुरासुरोंमें शक्तिरूपसे व्याप्त होनेसे आपका (व्यापी) नाम है ४६८ तत्समय कूर्म मोहिनी आदि अनेक रूप होनेसे आपका (नैकात्मा नाम है ४६९ मथन धारण वैरिविदारण अमृत दानादि कर्म करने से आपका (नैककर्मकृत्) नाम है ४७० पुरुषार्थ स्थापनार्थ सर्वत्र वास करने से आपका (वत्सर) (१) नाम है ४७१ बछड़े में गऊ की तरह भक्तोंपर वत्सल होने से आपका (वत्सल) नाम है ४७२ नित्यानन्य भक्तिसमूह वत्सोंकी तरह आपके होनेसे आपका(वत्सी) नाम है ४७३ धनेच्छुओं के देनेकेअर्थ रत्नों के भंडार होने से आपका (रत्नगर्भ) माम है ४७४ वाञ्छित वस्तुमात्र देनेमें समर्थ होने से आपका (धनेश्वर) नाम है ४७५ ॥ ५०

धर्मगुप् धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम् ।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षण ॥५१॥

अर्थ—फिर निज जनोंके धर्मके गोप्त होनेसे आपका (धर्मगुप) नाम है ४७६ अकारण अनुग्रह रूप धर्म के करने से आपका (धर्मकृत) नाम है ४७७ शरणागत रक्षण धर्मके नित्य सम्बन्धसे आपका (धर्मी) नाम है ४७८ सर्वत्र सबकालमें वर्तमान होने से आपका (सत्) नाम है ४७९ अपक्षय विनाशादि षट्विकार वर्जित होने से आपका (सत्अक्षर) नाम है ४८० दुष्टों को असत् (अप्राप्य) होने से (असत्) नाम है ४८१ असत्जनों का नाश करने से आपका असत्क्षर नाम है ४८२ भक्तके कीने अपराध

[१] वस निवासे वशेश्च इत्युणादि सरन सस्यार्द्ध धा तुक इति सस्य तः—

को नहीं जानने से आपका [अविज्ञाता] नाम है ४८३ अपरमित अंशु (किरणयाबुद्धि) होनेसे आपका [सहस्रांशु] नाम है ४८४ अनत ब्रह्मांडोके रचना करने वाले होने से आपका [विधाता] नाम है ४८५ शरणागत पालन के लक्षण ध्वजस्तंभ धारण करने से आपका कृतलक्षण नाम हैं ४८६।५१

गभस्तिनेमि, सत्वस्थ, सिंहो भूतमहेश्वर,
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्‌गुरु ॥५२॥

किरण युक्त सहस्राचक्र धारण करनेसे आपका [गभस्तिनेमि] नाम है ४८७ भक्तोंके अन्तःकरण में स्थित होने से आपका [सत्वस्थ] नाम है ४८८ भक्त बिसधि दुष्टों के मारने वाले होने से आपका [सिंह [१] नाम है ४८९ ब्रह्मादिस्तं वपर्यन्त जीवों को वश करनेवाले होने से आपका [भूतमहेश्वर] नाम है ४९० सब देवोंके आदि नाम मुख्य होने से आपका [आदिदेव] नाम है ४९१ जगज्जात जीवांसा अतिशय कर खिलोनाकी तरह क्रोड़ा करने से आपका [महादेव] नाम है ४९२ उन सब देवोंके स्वामी होनेसे आपका [देवेश] नाम है ४९३ फिर उनको अपने आज्ञानुसार स्वस्व अधिकारों पर स्थापन करनेसे आपका [देवभृत] नाम है ४९४ फिर उनको ततततकर्मका उपदेष्टा होने से आपका [गुरु] नाम है ४९५ ॥ ५२ ॥

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
शरीर भूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ।५३।

फिर उन्हीन की आपतको पारलगाने से आपका [उत्तर] नाम

[१] हिनस्तीति सिंहः हिसेर्वर्ण विपर्ययः—

है ४९६ अशेष वेदबाणी के पालन करने वाले होने से आपका [गोपति] [१] नाम है ४९७ सबविद्याओंके पालन होनेसे आपका [गोप्ता] नाम है ४९८ उसी वेदविद्या प्राप्य होनेसे [ज्ञान गम्य] नाम है ४९९ अनादि सिद्ध होनेसे आपका [पुरातन] [२] नाम है इति पंचम शतक व्याख्यातम् समाप्तम् ।

अथ षष्ठं शतकं व्याख्यायते ॥

प्रकृतिसे लेकर भूमि पर्यन्त भूतोंके भरण पोषण करनेसे आपका शरीरभूत भृत नाम है ५०१ तत्तद्देव रूप होनेसे यज्ञगतहविके भोक्ता होनेसे आपका [भोक्ता] नाम है ५०२ बानर रूप प्राप्त हुए देवों के स्वामी हो इससे आपका [कपीन्द्र] [३] नाम है ५०३ सर्व भूमि को यज्ञ दक्षिणार्थ समर्पण करने से आपका [भूरिदक्षिण) नाम है ५०४।५३

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः ।
विनयो जयःसत्यसन्धोदाशार्हः सात्वतांपतिः५४

यज्ञगत सोमके पान करने वालेहोने से [सोमप] नाम है ५०५ हविरूप अमृत के पीनेसे आपका [अमृतप] नाम है ५०६ मुक्त जीवों को अमृतरूप होनेसे [सोम] नाम है ५०७ लोकदीनजन गुरुजन और शत्रुजनों को क्रमसे सत्यदान सेवन और धनुष से

---

(१) छंदो भाषा वेष वाचां निर्वाहाद् गोपतिः स्मृति पातेर्डति गवां वाचांपतिः ॥

[२] पुरा पूर्व भवति इति सायंचिरमित्यत्र अव्यया ट्यु: प्रत्ययः तुडागमः गोपतिः ॥

[३) कपिरूपं प्रपन्नानाँ देवानामीश्वरत्वतः कपीन्द्र इति विख्यातः सप्तार्णो मनुनायकः इति

जय करने से आपका [पुरुजित] नाम है ५०८ स्वगुणामृत समुद्र में पीने की इच्छा रखने वाले हनूमान आदि को अतिशय कर होनेवाले होनेसे [पुरुसत्तम] नाम है ५०९ मारीच कुम्भकर्णादि को भी दमन करनेवाले होने से आपका [विनय] नाम है ५१० आश्रितजन आपको अपने वश करते हैं। इससे आपका (जय) नाम है ५११ सत्यप्रतिज्ञा वाले होने से ।आपका (सत्यसंध] नाम है ५१२ दशार्ण नाम यादव के वंश में जन्म लेनेसे आपका (दशार्ह) नाम है ५१३ भागवतों के पालन करनेवाले होनेसे (सात्वतांपति) (१) नाम है ५१४।५४

जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविमक्रः।
अंभोनिधि रनतात्मा महोदधिशयोन्तकः।५५।

अर्थ—उन भागवतों को अपनी परिचर्या से जिवाने वाले होने से आपका (जीव) नाम है ५१५ फिर उनी भागवतों को राज कुमारकी तरह शिक्षण करने से आपका (विनयता) नाम है ५१६ उन भागवतोंके वृत साक्षात् देखने से आपका (साक्षी) नाम है ५१७ फिर उन भागवतों को मुक्ति देने से आपका (मुकुन्द) नाम है ५१८ अपरिमित पराक्रम होने से आपका (अमितपराक्रम) नाम है ५१९ कमठ रूपसे समुद्रांतर्गत रहने से आपका (अम्भो-निध नाम है ५२० उस कमठपर शेषरूप से विराजमान होने से

---

(४) परंब्रह्म सत्वम् वा सत् यदस्यास्ति इति मतुप् ततोसंज्ञाया-मिति मतुप् वकारः तसौमत्वर्थें इति भसंज्ञायाम् सत्वान् तस्येद कर्म शास्त्रं वासात्वतं तत्करोतिति णिच् णाविष्ठवत् प्राति पदि कस्य इतीष्टवद्भावात् टिलोपः तेषांपतिः सात्वतांप

आपका (अनंतात्मा) नामहै ५२१ उसी अनन्त शय्यापर प्रलयांत-र्जल में सयन करने से आपका (महोद्धिशय) नामहै ५२२ उस समय सब जगहके अन्त करने से आपका अन्तक नामहै ५२३।५५

अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः
आनन्दा नन्दनोऽनन्दः सत्यधर्मात्रिविक्रमः।५६

अर्थ—प्रणवका प्रकृतिभूत अकार रूप स्मरण करने योग्य प्रादुर्भाव होने से आपका (अज) नाम है ५२४ प्रणवात्तररूप ही पूज्य होने से आपका महार्ह नाम है ५२५

इस प्रकार ऊंकार से भावना करने योग्य होने से आपका (स्वाभाव्य) नाम है ५२६ काम क्रोधादि शत्रु समूह जय करने वाले होने से आपका (जितामित्र) नाम है ५२७ स्मरण करने वालों को आनंदित करने वाले होने से आपका (प्रमोदन) नाम है ५२८ आनन्द वल्ली में निरूपण किये आनंद रूप होने से आप का आनन्द नाम है ५२६ जीवों को उसी आनन्द को प्राप्त कर आनंदित कराने से आप का (नन्दन) नाम है ५३० उसी आनन्द में सदा मग्न रहने से आपका [नन्द] नाम है ५३१ सत्यधर्म रूप होने से आपका [सत्यधर्मा] नाम है ५३२ अपनी महिमासे तीनों वेदों को क्रमण [व्याप्त] करने वाले होने से आपका [त्रिविक्रम] नाम है ५३३ ॥ ५६ ॥

महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महा शृंगः कृतान्तकृत् ।५७

यथोक्त वेदके देखने वाले होनेसे आपका [महिर्षी] नाम है ५३४ सांख्य वक्ता कपिल रूप होने से आपका कपिलाचार्य]

नाम है ५३५ सगर पुत्र कृतापराध तथा स्तुति किये के जानने वाले होनेसे आपका (कृतज्ञ) नाम है ५३६ पृथ्वी के पालन करने वाले होने से आपका (मेदिनीपति) नाम है ५३७ अ इ उ तीन पद रूप होने से आपका (त्रिपद) नाम है ५३८ ब्रह्मादि देवों के आप्तसख होने से आपका (त्रिदशाध्य) नाम है ५३९ एक श्रृंगरूप वराह होने से आपका (महाश्रृंग) नाम है ५४० काल रूप होने से हिरण्याक्ष के मारने वाले होने से आपका (कृमांतकृत) नाम है ५४१ ॥ ७ ॥

महावराहो गोविंदः सुषेणः कनकांगदी ।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥५८॥

अर्थ—रसातलगत भूमिके उद्धार करने वाले होनेसे आपका (महावराह) नाम है ५४२ नष्ट हुई भूमि को ढूंढ़के लानेसे आपका (गोविंद) नाम है ५४३ पचउपनिषद अंग वाले हो इससे आपका (सुषेण) नाम है ५४४ सुवर्ण मय अंगद (वाजू) होने से आपका (कनकांगदी) नाम है ५४५ उपनिषद्वयु होनेस अत्यन्त गुप्त हो इससे आपका (गुह्य) (२) नाम है ५४६ महागांभीर्य गुणवान होने से आपका (गंभीर) नाम है ५४७ अज्ञमनुष्यों को दुरव गाह होने से आपका (गहन) नाम है ५४८ कोई भी साक्षात रूप से नहीं जान सकता । इससे आपका (गुप्त) नाम है

---

(१) विल्द्धलाभे इति धातोः गवादि विन्देषुः संज्ञायाम् इतिशः तुदादिभ्यः शः ङित्वादिगुणः शेमुचादीना मिति नुम्—

(२) गुहू सम्वरणे इति गुहधात्तोः शं दुहि गुहिभ्यो वेति वक्तव्यम् इति क्वप्—

५५६ चक्रगदा के धारण करनेसे आपका (चक्रगदाधर) नामहै ५५०।५८

वेधाः स्वांगोजितः कृष्णो दृढः संकर्षणोऽच्युतः
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः।५६।

अर्थ—इस प्रकार अनन्त मंगलको विधान करने से आपका (वेधा) नाम है ५५१ अपने असाधारण छत्र चामरादि अंगयुक्त होने से आप का [स्वांग) नाम है ५५२ कोई नहीं जीत सकता इससे आप का [अजित] नाम है ५५३ अप्राकृत अतिरुचिर कृष्ण वर्ण होने से आपका (कृष्ण) नाम है ५५४ विराट रूपसे स्थूल और बलवान होने से (दृढ़] नाम है ५५५ चेतना चेतनको अपने भीतर आकर्षण करनेसे आपका [संकर्षण] नाम है ५५६ जो अपने स्वरूप स्थान ऐश्वर्य से कभी च्युत नहीं होनेसे आपका [अच्युत] नाम है ५५७ सबको आवरकर स्थिरहोनेसे आपका [वरुण] नाम है ५५८ स्वामि रूपसे आपका वरण करतेहैं इससे आपका [वारुण] नाम है ५५९ साधुजनों के आश्रय वृक्षरूप होनेसे आपका [वृक्ष] नाम है ५६० उनके पोषक होनेसे आपका [पुष्कराक्ष] नाम है ५६१ उनमें उदार मन रखने वाले होने से आपका [महमना] नाम है ५६२ ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान वैराग्य षडैश्वर्य के नित्य योग होने से आपका भगवान नाम है ५६३।५६

भगवान् भगहा नन्दी बनमाली हलायुधः।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ३०

अर्थ--उक्तषडैश्वर्य संपन्न हो सर्वत्र गमन करने से [भगहा]

नाम है ५६४ नंदगोपके पुत्र होनेसे आपका [नन्दी] नाम है ५६५ नित्य बनमाला को धारण करनेसेआपका [वनमाली] नाम है ५६६ जगतको खेती की तरह पालन करनेवाले खितयर होने से आपका [हलायुध] नाम है ५६७ स्ववाचक आवर्ण से प्राप्य होने से आपका [आदित्य] नाम है ५६८ समस्त तेजोहरण ज्योतिसे प्रकाश करने से आपका [ज्योतिरादित्य] नाम है ५६६ भक्तकृतापराधो के सहन शील होनेसे आपका [सहिष्णु] नाम नाम है ५७० परमधर्म मार्ग के उपदेष्टा होने से आपका [गतिसत्ताम] नाम है ५७१।६०

सुधन्वा खंडपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः । दिवस्पृक्सर्वदृग्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ।६१।

अर्थ--शारंग नाम उत्तम धनुष धारण करने वाले हो इससे आपका [सुधन्वा] [१] नाम है ५७२ तीव्र कोपसे फलसा से रौद्रसंग्राम के खंडन करने वाले होने से आपका [खंपरशु] [२] नाम है ५७३ वाहिर भीतर के शत्रु के विदीर्ण करने से आपका [दारुण] नाम है ५७४ शास्त्रार्थ रूप द्रविण के [धन] के देने वाले होनेसे आपका (द्रविणप्रद) नाम है ५७५ पर विद्या से अपने आकाश रूपको स्पर्श करने से आपका (दिविस्पृक)

---

(१) धन धान्ये तस्मात अतिप्द्दवपि यजि तजि तनि धनि तपिभ्यो नित् इति उसिः प्र० सोभनो धनुर्यस्य इति विग्रह धनुषश्च वा संज्ञायाम् इत्यनङ्--

(२) शृहिंसायाम् ततः आङ्वरयोः खनिशृभ्यांडिच्च इति कुःप्रत्ययः । तीव्र कोपति परशुनपरौद्रसंग्राम खडनात् इत्युक्तः खंडपरशुर्नवार्णाः शोक नाशकः

नाम है ५७६ ब्रह्मांडवर्ती चेतन चेतनके देखने वाले होने से आपका (सर्वदृक) नाम है ५७७ एक वेद के विस्तार करने से आपका (व्यास) नाम है ५७८ पंचम वेद रूपा वाणी के पति होने से आपका (वाचस्पति) नाम है ५७९ योनिके बिना ही उत्पन्न होने से आपका (अयोनिज) नाम है ५८०।६१

त्रिसामा सागमः सामनिर्वाणो भेषजं भिषक्।
सँन्यासकृच्छमः शातोनिष्ठा शांतिः परायणः६२

अर्थ—बृहद्रथ्यन्तर वाम देव्य नाम के तीन साम आप को गाते है इससे आपका (त्रिसामा) नाम है ५८१ और आप भी अपनी प्रीति से उन्हीं सामों को गाते हो इससे आपका (सामगो) नाम है ५८२ और वो साम आपका ही रूप है इससे आपका (साम) नाम है ५८३ निर्दोषों की परम प्राप्य निर्वाण रूप होने से आपका (निर्वाण) नाम है ५८४ असाध्य संसार रोग कूं निवर्तक परमोषधि रूप होने से आपका (भेषज) नाम है ५८५ संसार रोग के निदान को तथा चिकित्सा को जानते हो इससे आपका (भिषक्) नाम है ५८६ सन्यासी जनों के रजस्तम के छेदन करने वाले होने से आपका (सन्यासकृत) नाम है ५८७ इच्छा भय क्रोधादिकों के शांत्युपाय के कहने वाले होने से आपका (शम) नाम है ५८८ वकार रहित मन होने से आप का (शान्ता) नाम है ५८९ वयोजनोंके हृदयमें स्थिर होकर रहने से आपका (निष्ठ) नाम है ५९० समाधिस्थ होने से सर्व विकारों के निवृति होने से आपका (शांति) नाम है ५९१ परमाभक्ति आपको प्राप्ति कराने

वाले होने से आपका नाम (परायण) नाम है ५६१।६२

शुभांगः शांतिदः सृष्टा कुमुदःकुवलेशयः।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः।६३।

अर्थ-यमनियमादि शुभ अंगोंके उपदेशक होनेसे आपका (शुभांग) नाम है ५६३ इस प्रकार प्राप्त योगांगों को सायुज्यरूपाशाँति के देने से आपका (शांतिद) नाम है ५६४ कर्मानुसार सृष्टि सजने से आपका (सृष्टा) नाम है ५६५ भूमिमें कर्मफल भुगावते प्रसन्न होते हो इससे आपका (कुमुद) (१) नाम है ५६६ भूमिमें भ्रमण करने वाले जीवों को बश करते वर्तमान होने से आपका (कुवलेशय) नाम है ५६७ संसार बीजकी खेतरूप प्रकृति के व्यवस्यापक होनेसे आपका [गोहित] नाम है ५६८ स्वर्ग भूमि के पति होने से आपका (गोपति) नाम है ५६९ इस कर्मफल समुदायके रक्षक होने से आपका (गोप्ता) नाम है ६००

इति षष्टं शतकं व्याख्यातम्

॥ अथ सप्तमम् शतकं व्याख्यायते ॥

धर्म आधार होने से आपका (वृषभाक्ष) नाम है ६०१ संसार चक्र का आधार जो धर्मवो आपको प्रिय होने से आपका (वृषप्रिय) नाम है ६०२।६३

अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतांवरः६४

अर्थ—प्रवृत्त कर्मवाले मनुष्यों को संसार से निवृत्त नहीं करते

---

(१) मुद् हर्षे मूल विभुभादिभ्य उप संख्यानम् कौ मोदते

हो इससे आपका (अनिवर्ती) नाम है ६०३ निवृत्त धर्म वाले जिसकी आत्मा है इससे आपका (निवृत्तात्मा) नाम है ६०४ प्रवृत्त स्वभाव वालों को ज्ञानादि गुणों के संकुचित करनेसे आपका (सक्षेप्ता) नाम है ६०५ इस प्रकार समोक्षेच्छु भोगेच्छु जीवों के कल्याण करने से आपका (क्षेमकृत) नाम है ६०६ उनके कल्याण करने वाले हो इससे (शिव) नाम है ६०७ श्रीवत्सका हृदय में चिन्ह होने से आपका श्री वत्स वक्षा) नाम है ६०८ लक्ष्मी के विहार स्थान होने से आपका (श्रीवास) नाम है ६०९ आपको पति लक्ष्मी ने वरण किया इससे (श्रीपति) नाम ६१० देवों में सबों में श्रीमानों में आपके तुल्य अन्य नहीं होने से आपका (श्रीमतांवर) नाम है ६११।६४

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमांल्कोकत्रयाश्रयः ६५

अर्थ—लक्ष्मीके लिये अपने प्रणय स्नेह रसको देते हो इससे आपका (श्रीद) नाम है ६१२ श्री के स्वामी हो अथवा आपकी श्रीस्वामिनी होने से आपका (श्रीश) नाम है ६१३ श्री आपके वक्षस्थल में स्वर्ण रेखा रूप निवास करती है इससे आपका (श्रीनिवास) नाम है ६१४ श्री आपकी निधि खजाने के तरह होनेसे आपका (श्रीनिधि) नाम है ६१५ आपकी जगत में महत्वकी विख्यात करने वाली लक्ष्मी होने॰से आपका (श्रीविभावनः) ६१६ जैसे प्रकाश को रत्न सुगन्धि को पुष्प चांदनी को चन्द्रमा और माधुर्य रसको अमृत धारण करते हैं इस तरह नित्य श्रीके धारण करने से (श्रीधर) नाम है ६१७ परव्यूहाबतारादिकों में अपने अनुरूप लक्ष्मीको करते हो इससे आपका (श्रीकर) नाम है ६१८ सर्व

पुरुषार्थ के लिये आपको लक्ष्मीही आश्रयण करने योग्य होती है इससे आपका (श्रेयश्रीमान्) नाम है ६१६ जगन्माता लक्ष्मी सहित तीनों लोकों के आश्रय होने से आपका (लोक त्रयाश्रय) नाम है ६२०।६५

स्वक्षः स्वंगः शतानन्दो नंदिर्ज्योतिर्गणेश्वरः
विजितात्माऽविधेयात्मसात्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ६६

अर्थ—सौंदर्यामृत के समुद्र नेत्र होनेसे आपका (स्वक्ष) नाम है ६२१ लक्ष्मी को भी वाँछित दिव्य देह होने से आपका स्वङ्ग) नाम है ६२२ आनन्दवल्ल्युक्त सबसे शत गुणित आनन्द होने से आपका (शतानन्द) नाम है ६२३ इसी प्रकार सब तरहसे लक्ष्मी से आनन्दित रहने से आपका (शतानन्दी नाम है ६२४ नित्यसूरि-गणों के स्वामी होनेसे आपका (ज्योतिर्गणेश्वर) नाम है ६२५ अपने आत्माको वशमें रखने से आपका [विजितात्मा] नाम है ६२६ यहाँ आओ यहाँ बैठो ये भोजन करो इस तरह भक्तजनों के कहने के अनुसार आप अंगीकार करते हो इससे आपका (विधेयात्मा) नाम है ६२७ इस प्रकार उत्कृष्ट कीर्तियुक्त होने से आपका (सत्कीर्ति) नाम है ६२८ कभी भी किसी प्रकार के संशय न होने से आपका (छिन्नशंसय) नाम हैं ६२६।६६

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिर : ।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः॥६७॥

अर्थ—प्रत्यक्ष विषय होनेसे चर्म दृष्टिवाले को भी साक्षात्कार होने से आपका (उदीर्ण) नाम है ६३० सर्वत्रचक्षु होने से अर्थात वो चीज कोई नहीं है जिसे आप न देखते हो इसी से आपका

(सर्वतश्चक्षु) नाम है ६३१ श्री देवीके ही आधीन होकर सब काम करते हो इससे आपका (अनीश) (१) नाम है ६३२ सब समय निरन्तर प्रत्यक्ष किये नाना विघ्नों से सर्वत्र स्थित रहते हो इससे आपका [शाश्वतस्थिर] नाम है ६३३ सब समय व्यक्तादि रूप से भूमि में शयन करते हो इससे आपका (भूशय) (२) नाम है ६३४ विश्वजन से हित करनेवाले रूप शील से अपने आपेके भूषण रूप होने से आपका (भूषण) [३] नाम है ६३५ भक्तों के ऐश्वर्य रूप होने से आपका (भूति) (४) नाम है ६३६ सबों के स्वामी होकर भी शोक के न होने से आपका (अशोक) नाम है ६३७ भक्तों के शोकों के नाश करने से आपका (शोकनाशक) नाम है ६३८।६७

अर्चिष्मानर्चितः कुंभो विशुद्धात्मा विशोधनः।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ६८

अर्थ——सदा दिव्यतेजोयुक्त होने से आपका (अर्चिष्मान्) नामः है ६३९ विश्व में पूजित होने से आपका (अर्चित) नाम है ५४० भक्तजनों के कामित वाञ्छित

---

(१) यद्वा शरणा गतानां त्याच करणेऽसमर्थः (शरणागतके त्याग करने में असमर्थ होनेसे) (अनीश) नाम है।

(२) शीङ् स्वप्ने इति धातो (अधिकरणेशेतेः) इत्यच् प्रत्ययः गुणः अय

(३) भूष अलंकारे चुरादिः णिच् तसो युच् प्रकरणा क्रुध मंडार्थे-भ्यश्चेति युच् अनः णिलोपणत्वे,

(४) भू धातो स्त्रियांक्तिन् श्रीयुकः क्तिति इति गुणा भावइड भावश्चः

होने से आपका (कुम्भ) (१) नाम है ६४ आश्रितजनों को अविशेष हो सर्वस्व देते हो इससे आपका (विशुद्धात्मा) नाम है ६४२ जीवों को आप अपनी प्राप्ति के उपयोगी करते हो इससे आपका (विशोधन) नाम है ६४३ किसी से रोके नहीं जाते हो इससे आपका [अनिरुद्ध] नाम है ६४४ आपका पतिपक्ष सामना करने वाला कोई नहीं है इससे आपका '(अप्रतिरथ) नाम है ६४५ जीवों के प्रकाश करनेवाले होनेसे आपका (प्रद्युम्न) नाम है ६४६ अपरिमितबल होने से आपका (अमित विक्रम) नाम है ६४७ । ६८

कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः ।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहाहरिः ६६

अर्थ—काल चक्र को अविद्या आदि नेमि (धार) को नाश करने वाले हो इससे आप का (कालनेमिनिहा) नाम है ६४८ शूरके वंश में उत्पन्न होने से आप का (शौरि) नाम है ६४६ सब राक्षस मात्रके मारने वाले होने से आपका (शूर) नाम है ६५० शूरजनों के स्वामी होने से आपका (शूरजनेश्वर) नाम हैं ६५१ त्रिलोक के आत्मा होने से आपका त्रिलोकात्मा नाम है ६५२ तीनों लोकों के ईश (नियता होने से आपका त्रिलोकेश नाम है ६५३ ब्रह्मा और रुद्र ये दोनों आपके ही अङ्गसे उत्पन्न हुये हैं

---

(१) (कमेः कुम् च) इति भः प्रत्ययः कुमावेशश्च यद्वा इदविभ्यांभः वाहुलकादन्यतोपि पृषोदरा लक्षणः कमेरत उः (नेट्वशिकृति) इतीडभावः बाहुलकान्नमुणः अनुस्वारपरसवर्णो ।

इससे आपका (केशव) (१) नाम हैं ६५४ केशिदैत्यके मारने से आपका (केशिहा) नाम है ६५५ भक्तों के दुःख दरिद्र पापको दूर करने से आपका हरि (२) नाम है ६५६ । ६६

कामदेवः कामपालः कामी कांतः कृतागमः ।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनंजय ॥७०॥

अर्थ—सबों के कामों को देनेवाले होने से आपका (कामदेव) नाम हैं ६५७ फिर उनको काम देकर पालन करने से आपका (कामपाल) नामहै ६५८) देनेयोग्य कामों के पूर्ण भंडार विद्यमान होने से आपका (कामी) नाम है ६५६ सबकी प्राणाधिक प्रिय होने से आपका (कांत) नाम है ६६० मन्त्र विद्या के व्यंजक होने से आपका (कृतागम) नाम है ६६१ युगानुसारिरूप को हर समय बदलनेसे आपका (अनिर्देश्यवपु) नाम है ६६२ अपनी अपूर्व शक्ति से जगत् व्याप्त होने से या प्रवेश होने से आपका (विष्णु) नाम है ६६३ साधुजनों के दुःख दूर करने वाले होने से आपका (वीर) नान हैं ६६४ देश से काल से और गुणों से अन्त नहीं होने से आपका (अनन्त) नाम है ६६५ मणि मोती रत्न और सुवर्णादि धनको अपने स्वरूप से तुच्छ करने से आपका (धनंजय) नाम है ६६६।७०

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः ।
ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः॥७१॥

---

(१) ब्रह्मेशयोः केशवत्वात् केशवः परिकीर्तितः ।

(२) यद्वा इडोपहूतं गेहेषु हरे भागं क्रतुष्वहं वर्णश्च मेहरिः श्रेष्ठः तस्माद्धरिरितिस्मृत भग० शां०

अर्थ—जीवात्मा और प्रकृति को ब्रह्म कहते हैं उन दोनों से सब अवस्था में स्थिति भोगादि के कारण होने से अथवा वेद तथा ब्राह्मणों के हितैषी होने से आपका (ब्रह्मण्य) नाम है ६६७ महदादि तमोगुण कार्यको भी ब्रह्म कहते हैं उसको बनाने वाले होने से आपका (ब्रह्मकृतब्रह्मा) नाम है ६६८ स्वरूप रूप गुण और विभवों से स्वयं परिपूर्ण होने से आपका (ब्रह्मा) नाम है ६६९ नित्य तप के बढ़ाने से आपका (ब्रह्मविवर्धन) नाम है ६७० अनन्त वेदों के जानने से आपका ब्रह्मवित्) नाम है ६७१ वेद्य के व्यवस्थापन अर्थ आप अत्रिके घर में जन्म लेने से दत्तात्रेयादि रूप से आप का (ब्राह्मण) नाम है ६७२ प्रमाण प्रमेय वस्तु जाके होय इस्से आपका (ब्रह्मी) नाम है ६७३ वेदों के अर्थ के यथा जानने होनेवाले से आपका (ब्रह्मज्ञ) नाम है ६७४ वेदाधिकारी ब्रह्मण आप के प्रिय होनेसे आपका (ब्राह्मण प्रिय) नाम है ६७५ । ७१

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः ॥
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥७२॥

अर्थ—महान्पाद विन्यास (डग) होने से आप का (महाक्रम) नाम है ६७६ रजकण को ब्रह्म और ब्रह्म को रजकण करना कर्म होने से आप का (महाकर्मा) नाम है ६७७ अनादि अविद्या रूप अन्धकार निवर्तक तेज होने से आपका (महातेजा) नाम है ६७८ चित्त द्वार से हृदय में प्रवेश करने से आपका महोरग (१) नाम है ६७९ जिसकी पूजा को सबकोई को करने में सुकरहो

(१) गम्ल गतो गमेर्डः उरसोलोपश्क अलोत्यस्यति स लोपः ततष्टि लोपः महोरगइति रुवातश्चितद्वारा प्रवेशनात् ।

उसका (महाक्रतु) नाम हैं ६८० देवतान्तरों के यजन करने वालों से आपके पूजन करने वाले का प्राधान्य होने से आपका (महायज्वा) नाम है ६८१ अन्य योगों से आपके योग करने वाले का प्राधान्य होने से आपका (महायज्ञ) नाम हैं ६८२ आपही हवि रूप होने से आपका (महाहुवि) नाम है ६८३ ।

स्तव्यःस्तव्यप्रियःस्तोत्रं स्तुतिःस्तोता रणप्रियः
पूर्णःपूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः॥७३॥

अर्थ---स्तुति करने योग्य से आपका (स्तव्य) नाम है ६८४ जिस किसी ने यथा कथँ चित की स्तुति आपको प्रिय है इससे आपका स्तवप्रिय नाम है ६८५ आप से ही प्रतिपाद्य रूप होने से आपका स्तोत्र नाम है ६८६ शेष सनकादिक आपकी ही स्तुति करते हैं इससे आपका स्तुति नाम है ६८७ स्तुति करने वालों की आप भी स्तुति करते हो इससे आपका (स्तोता) नाम है ६८८ सुहृदों की प्रसन्नता करने वाली युद्धादि चेष्टा आपकी है इससे आपका (रणप्रिय) नाम है ६८९ अवाप्त समस्त काम हो इससे आपका (पूर्ण) नाम हैं ६९० स्तुति करने वालोंके मनोरथ पूरण होने से आपका(पूरयिता)नाम है नाम है ६९१ पातकी जनोंके पावन होने से आपका पुण्य नाम है ६९२ पुण्य श्लोक है ऐसी आपका कीर्ति से आप का पुण्यकीर्ति नाम है ६९३ संसार महाव्याधि के विरोध रूप होने से आपका (अनामय) (१) नाम है ६९४ । ७३

---

(१) मीञ् हिंसायाम् आङ् पूर्वात्तस्मात्त पचाद्यच् अवशे नापियन्नाम्निकीर्तिते सर्वपातके पुमान विमुच्यते सद्यः सिंह-त्रस्तैर्मृगैरिव--

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥ ७४ ॥

अर्थ-निज मनोरथ पूर्ण करने में मनकासा जिसका वेग है इससे (मनोजव) नाम है ६६५ गंगादि तीर्थ के हेतु होनेसे आपका (तीर्थकर) (१) नाम है ६६६ दिव्य ज्योति के कारण होने से आपका (वसुरेता) नाम है ६६७ आत्मस्वरूप भूत धनको अपने भक्तजनों को देते हो इससे आपका (वसुप्रद) नाम है ६६८ देवकी वसुदेव को अपने पितृ रूप धन के देने से आपका (वसुप्रद) नाम है ६६६ वसुदेव के पुत्र होने से आपका (वासुदेव) नाम है ७००

इति सप्तमं शतकं व्याख्यातं अथाष्टमं व्याख्यायते

लोकहितेच्छु हो क्षीरसागर में बसने से आपका (बसु) नाम है ७०१क्षीरसागरमें लक्ष्मी सहित बसने पर भी वसुदेव जीमें मन रखने से आपका (वसुमना) नाम है ७०२ वसुदेव के घर से नंद करके ग्रहण किये गये हो इससे आपका (हविष) नाम है ७०३।७४

सद्गतिःसत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥७५॥

अर्थ--सन्तों को प्राप्त होने से आपका (सतांगति) नाम है ७०४ रासलीला आदि क्रीड़ा सत्य होने से आपका (सत्कृति) नाम है ७०५ आपही सन्तों की सत्ता हो इससे आपका (सत्ता) नाम है ७०६ सत जनों के पुत्रकलत्रादि भूति आपही हो इससे

---

(१) तीर्थशब्दोह्यनेकार्थः कृञोहत्विति करोतेःहतौ टः गुणः रपर पातृ तुदि वचि रिचि सिचिरिथक्.

आपका [सद्भूति] नाम है ७०७ सत्जनों के परम स्थान होने से आपका (सत्यनारायण) नाम है ७०८ यादव पाण्डव रूप भूभार उतारने को सेना होने से [शूरसेन] नाम है ७०९ यदुबंश के उद्धार करने से आपका (यदुश्रेष्ठ) नाम है ७१० मनुष्य रूप होने पर सनकादि सन्तन की निवास भूमि होने से आपका (सन्निवास) नाम है ७११ सुन्दर (पावन) मनोहर] यमुना तट पर जल कीड़ा रास विहारादि करने से [सुयामुन] नाम है ७१२।७५

भूतावासो वासुदेवःसर्वासुनिलयोनलः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः ॥७६॥

अर्थ--सब भूतों के निवास होने से आपका (भूतावास) नाम है ७१३ बसुदेव पुत्र होने पर द्वांदशाध्यात्मक के वश करने से (वासुदेव) नाम है ७१४ सबके प्राणों के अवलंब होने से आपका [सर्वासुनिलय] नाम है ७१५ भक्त के कीने के प्रतिकार करके असमर्थ होने से आपका (अनल] (१] नाम है ७१६ गोबर्धनोद्धरणादि लीला में इन्द्रादिकों के दर्प के नाश करने से आपका [दर्पहा) नाम है ७१७ मद पान कराकर यादवों को दर्प देने से आपका [दर्पद] नाम है ७१८ गर्वरहित होने से आपका [अदृप्त] नाम है ७१९ कोई भी धारण नहीं कर सकता इससे आपका [दुर्धर] नाम है ७२० कोई जय नहीं कर सकता इससे आपका [अपराजित] नाम है ७२।१७५

---

[१] अलभूषणाद्यर्थः तस्मात्पचाद्यच् यद्वा मान्तादेवालमोव्ययात् पर्याप्तिवचनान्मत्त्वर्थीयो अर्श आद्यच् अव्ययानां भमात्रे टलोपः नञ् समासः नञो नलोपः नुट्

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ॥
अनेककमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः॥७७॥

अर्थ--विश्व ही आपका अंग है इससे आपका [विश्वमूर्ति] नाम है ७२२ विश्व की आश्रय रूपा मूर्ति होने से आपका [महामूर्ति] नाम है ७२३ प्रकाशरूप होने से आपका [दीप्तमूर्ति] नाम है ७२४ और कोई भी मूर्ति नहीं है इससे आपका [अमूर्तिमान्] नाम है ७२५ षोडश हजार रूप बनकर १६१०८ स्त्रियोंसे रमण करने से आपका [अनेकमुर्ति] नाम है ७२६ मनुष्य रूपमें पर रूप के अप्रकाशक करने से आपका [अव्यक्त] [१] नाम है ७२७ अर्जुन को विश्व रूप दिखाने के समय अनेक रूप होने से आपका [शतमूर्ति] नाम है ७२८ असंख्य मुख दिखाने से आपका [शतानन] नाम है ७२९।७७

ऐको नैकः सवः कः किम् यत्तत्पदमनुत्तमम् ।
लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः।७८।

अर्थ--स्वसमान दूसरे के न होने से आपका [एक] नाम है ७३० अनेक विभूति रूप होने से आपका [नैक] नाम है ७३१ स्वविषय ज्ञान को नहीं होने देते इससे आपका [स] नाम है ७३२ आपमें तो सब भूत बास करते हैं और आप सब भूतों में बास करते हैं इससे आपका [व] नाम है ७३३ सब भूत जातमें प्रकाश आपका ही है इससे आपका [क] नाम है ७३४ ईप्सित अर्थ प्राप्ति के अर्थ प्रष्टव्य होने से आपका [किम्] नाम है ७३५ जगत रक्षणार्थं

[१] अंजू व्यक्ति श्लक्ष्णादिषु विपुर्वात्क्तः तत नञ्

यत्न करते हो इससे आपका (यत्न) (१) नाम है ७३६ भक्तों को ज्ञान भक्ति के विस्तार करते हो इससे आपका (तत्न) नाम है ७३८ लोक (भुवन) मात्रों के बन्धु होने से आपका (लोक-बन्धु) नाम है ७३६ लोकों के मनोरथ दान में समर्थ नाम होने से आपका (लोकनाथ) नाम है ७४० मधुके बंश में जन्म लेने से आपका (माधव) नाम है ७४१ भक्त के समागम में सब कामको भूल जाते हो इससे आपका (भक्तवत्सल) नाम है ७४२।७८

सुवर्णवर्णो हेमांगो वरांगश्चन्दनांगदी ॥
वीरहा विषमः शून्योऽघृताशीरचलश्चलः ।७६॥

अर्थ--गुणयुक्त स्वर्ण निकष [कसौटी] निर्दोष उज्ज्वल वर्ण हो इससे आपका (सुवर्णवर्ण) नाम है ७४३ दिव्य शुद्ध सत्वरुप होने से आपका (हेमांग) नाम है ७४४ दिव्यमङ्गलरूप देवकी को दर्शन देनेसे आपका [वरांग] नाम है ७७५ आल्हाद करने वाले अंगद [वाजू] आदि आभूषणों के नित्य धारण करने में आपका [चन्दनांगदी] नाम है ७४६ दुष्टों के समूल घातनाश करने से आपका (वीरहा) नाम है ७४७ कुटिलों के भय स्वजनों को अभय देने से आपका (विषम) नाम है ७४८ दोष वर्जित होने से वा ब्रह्मरूप होने से आपका (शून्य) नाम है ७४६ गोपीगृहवर्ती माखन में अथवा जगत के आप्यायन में मनोरथ होने से आपकी (घृताशी) नाम है ७५० दुर्योधनादिकों से अभेद्य होने से आपका (अचल) नाम हैं ७५१ पाण्डव तथा भीष्मादि भक्तों के लिये

---

(२) यतीप्रयत्ने इति यतो धातोः क्विप् कृष्णा कृष्णोति कृष्णोति योमां स्मरतिनित्यशः जलंभित्वाय थापद्मं नरका दुद्धराम्यहम् ।

स्वप्रतिज्ञा का त्याग करने से आपका (चल) नाम है ७५२।७९

अमानीमानदोमान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक्।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः॥८०॥

अर्थ—भक्तोंके आगे अपना अहंकार छोड़ने से आपका (अमानी) नाम है ७५३ युधिष्ठिरादिकों को मान देने से आपका [मानद] नाम हैं ७५४ सर्वोत्कृष्ट मान है होने से आपका (मान्य) नाम है ७५५ लोकों के भर्ता होने से आपका [लोकस्वामी] नाम है ७५६ तींनों लोकों के धारण करने से आपका [त्रिलोकधृत] नाम है ७५७ आराधक जनों की स्मरण रखने वाली बुद्धि होने से आप का (सुमेधा) नाम है ७५८ पुत्रोत्पादनार्थ किये देवकी के यज्ञ में साक्षाद्दर्शन देने में आपका (मेधज) नाम हैं ७५९ देवकी के जन्म रूपधन लाभ से आपका [धन्य] (१) नाम है ७६० बल्लव गोप और बसुदेव आदि की सजातीयाभिमानिनी मेधा होने से आपका [सत्यमेध] (२) नाम है ७६१ गोवर्धन धारण करने से आपका [धराधर] नाम है ७६२।८०॥

---

[१] धन धान्ये पचाद्यच् धनगणं लब्धा इति यत् तृन्नंतम् धन्यस्तुदेवकी जन्मधनलाभादितिस्मृतः ॥

[२] यदि वोस्तिमयिप्रीतिश्लाध्योहं भवतां यदि तन्मात्र बुद्धि-सदृशोबुंद्धिःर्वः क्रियतांमयि मेधतेः मेधाशब्दः अस्तेःशतरि सच्छब्दा तत्रसाधुः इति यति सत्यशब्दश्च नित्यमसिच् प्रज्ञामेधयोः बहुव्रीहिः पुंगत् ।

तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतांवरः ।
प्रग्रहो निग्रहोऽव्यग्रो नैकशृंगोगदाग्रजः ॥८१॥

अर्थ-सुहृत्पालन रूप तेज के वर्षा करने से आपका [तेजोवृष] नाम है ७६३ अमानुषी द्युति के धारण करने से आपका [द्युति-धर) नाम हैं ७६४ सब शास्त्र धारण करने वालों में श्रेष्ठ होने से [सर्वशस्त्रभृताम्बर] नाम है ७६५ पार्थ सारथी हो लगाम पकड़ने से (प्रग्रह) नाम है ७६६ सारार्थ होकर दृष्टि मात्र से ही शत्रुजनों के निग्रह करने से आपका [निग्रह] नाम है ७६७ पार्थद्विड्वि-निग्रह में व्यग्र होने से आपका [व्यग्र] नाम है ७६८ बैरीबाधक अनेक शृंग होने से आपका [नैकशृंग] नाम है ७६९ गदनाम से प्रसिद्ध अग्रज (बड़ा) भाई होने से आपका [गदाग्रज] नाम है ७७० । ८१

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहचतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥ ८२ ॥

अर्थ—संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध और बासुदेव चतुर्व्यूहमूर्ति होने से आपका (चतुर्मूर्ति) नाम है ७७१ दिव्यचार भुज के होने से आपका [चतुर्बाहु] नाम है ७७२ बासुदेवादि चार मूर्ति नाम मात्र ही भेद होने से वास्तव से ऐक्य होने से आपका [चतुर्व्यूह] नाम है ७७३ सामीप्य सारूप्य सालोक्य सायुज्य चार प्रकार की गति होने से आपका [चतुर्गति] नाम है ७७४ अधिक करके भेद से प्रकट किये हैं स्थूल सूक्ष्म जाग्रदाद्यवस्थाओं में चतुर आत्मा आपने इससे आपका [चतुरात्मा] नाम है ७७५ वो चारों

रूप से युक्त होने से आपका [चतुर्भाव] नाम है ७७६ चारों वेदों को जानने से आपका [चतुर्वेदवित्] नाम है ७७७ एकांश से अवतार लेने से आपका [एकपात्] नाम है ७७८।८२

समावर्तो निवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ॥

दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥८३॥

अर्थ—इन चतुर्व्यूहों का आवर्तन करने वाले होने से आपका [समावर्त] नाम है ७७९ इच्छा से जगदधिकार से निवृत्त होने से आपका [निवृत्तात्मा] नाम है ७८० सुर सुरमनुष्यादिकों से अजेय होने से आपका [दुर्जय] नाम है ७८१ आपके चरणों को छोड़कर प्राप्य के नहीं होने से आपका [दुरतिक्रम] नाम है ७८२ अजितेंद्रियों को अप्राप्य होने से आपका [दुर्लभ] नाम है ७८३ नेत्र रोगी को सूर्य की तरह अगम्य होने से आपका (दुर्ग) (१) नाम है ७८५ आपका आवास भूमि दुष्कर है इससे आपका [दुरावास] नाम है ७८६ उन्मार्ग गामी पुरुषों के आप मारने वाले होने से आपका [दुरारिहा] नाम है ७८७।८३

शुभांगो लोकसारंगः सुतंतुस्तंतुवर्धनः ।

इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥ ८४ ॥

अर्थ—ध्यान के योग्य सुंदर अंग है, इस कारण आपका [शुभांग] नाम है ७८८ लोक में सार वस्तु को ग्रहण करने से अथवा प्रण व रूप होने से आपका (लोकसारंग) नाम है ७८९

---

(१) सुदुरोरधि करणो (ङः) गमृमृगलौ इति गम् धातो दुरुपपदङात्ः दुरन्न दुखार्थः

तन्तु की नाईं विस्तार करते हैं, इस कारण आपका (सुतन्तु) नाम है ७६० संसार को बढ़ाने से आपका (तन्तुवर्द्धन) नाम है ७६१ बड़े कार्य के करने से आपका (इन्द्रकर्मा) नाम है ७६१ ब्रह्मादि आपके बड़े कार्य हैं, इससे आपका (महाकर्मा) नाम है ७६२ सब कर चुके करना कुछ नहीं इससे आपका (कृतकर्मा) नाम है ७६३ वेद आपने किया इससे आपका (कृतागम) नाम है ७६४ ॥ ८४ ॥

उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः ।
अर्को वाजसनः शृंगी जयन्तः सर्वविज्जयी ॥८५॥

अर्थ—अपनी इच्छा करके उत्कृष्ट जन्म धारण करने से आपका [उद्भव] नाम है ७६५ सौभाग्यशाली होने से आपका (सुन्दर) नाम है ७६६ कृपालु होने से आपका (सुन्द) नाम है ७६७ रत्नसी सुन्दर नाभि होने से आपका [रत्ननाभ] नाम है ७६८ सुन्दर नयन अथवा ज्ञान होने से आपका [सुलोचन] नाम है ७६६ पूजनीय ब्रह्मादिकों से पूजा के योग्य होने से आपका (अर्क) नाम है ८०० इच्छुकों को अन्न देनेसे आपका [बाजसन] नाम है ८०१ प्रलयमें मत्स्यरूप धारण करनेसे आपका [शृङ्गी] नाम है ८०२ दुष्टों को जीतने से आपका [जयन्त] नाम है ८०३ बाह्य और आभ्यन्तर सब प्रकार का ज्ञान रखने से आपका [सर्ववित्] नाम है ८०४ हिरण्याक्षादि असुरों को जीतने से आपका (जयो) नाम है ८०५ ॥ ८५ ॥

सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥८६॥

अर्थ--देह पर सुवर्ण से बिन्दु, हैं इस कारण आपका [सुवर्णबिन्दु] नाम है ८०६ रागद्वेषादि आपको जीत नहीं सकते इससे आपका [अक्षोभ्य] नाम है ८०७ सम्पूर्ण वागीश्वर ब्रह्मादिकों के भी ईश्वर हैं, इससे आपका (सर्ववागीश्वरेश्वर) नाम है ८०८ योगीजन आनन्द पूर्वक आपके हृदय में बिहार करते हैं इस कारण आपका [महाह्रद] नाम है ८०९ दुरत्य माया है, आपकी इससे आपका [महागर्त] नाम है ८१० तीनों काल आपमें अनवच्छिन्न हैं इससे आपका [महाभूत] नाम है ८११ सम्पूर्ण प्राणी आपमें निवास करते हैं, इससे आपका (महानिधि) नाम है ८१२ ॥८६॥

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पवनोऽनिलः
अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥ ८७॥

अर्थ—पृथ्वी का बोझ उतार आनन्द करने से आपका [कुमुद] नाम है ८१३ सुन्दर फूलों के देने से आपका (कुन्दर) नाम है ८१४ कुन्द से स्वच्छ अंग होने से आपका (कुन्द) नाम है ८१५ इन्द्रवत् तापत्रय को दूर कर सब कामनाओं को देते हैं, इस कारण आपका (पर्जन्य) नाम है ८१६ स्मरणमात्र से पवित्र करते हैं, इससे आपका (पवन) नाम है ८१७ सदा दूर से प्रेरणा करते हैं, इससे आपका (अनिल) नाम है ८१८ आनन्द स्वरूप अमृतको पान करने से आपका (अमृतनाश) नाम है ८१९ मरण रहित शरीर धारण करने से आपका (अमृतवपु) नाम है २० सबको जानने से आपका (सर्वज्ञ) नाम है ८२१ सब जगह मुख होने से आपका (सर्वतोमुख) नाम है ८२२ ॥ ८७ ॥

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रोधोदुं बरोश्वत्थश्चाणूरांध्रनिषूदनः ॥८८॥

अर्थ--भक्ति से अर्पित जो पुत्रपुष्पादिक उन्हीं से प्राप्ति के योग्य हैं, इससे आपका (सुलभ) नाम है ८२३ शरणागत की पालना आपका सुन्दरव्रत है इससे आपका (सुव्रत) नाम है ८२४ स्वतन्त्र होनेसे आपका (सिद्ध) नाम है ८२५ देवताओंके शत्रुओं को जीतने से आपका (शत्रुजित्) नाम है ८२६ शत्रुओं को आप तपाते हैं इससे आपका (शत्रुतापन) नाम है ८२७ वट बृक्ष के सदृश आपकी माया प्राणियों के ऊपर नीचे फैली हुई हैं इससे आपका (न्यग्रोध) नाम है ८२८ आकाशमें व्याप्त हैं, अथवा अन्नादिक से सबका पोषण करते हैं इस कारण आपका (उदुंवर) नाम है ८२९ "उर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्" एवंभूत आप अनादि हैं इससे आपका (अश्वत्थ) नाम है ८३० अन्ध्रदेश के चाणूर को मारने हारे हैं इससे आपका (चाणूरान्ध्रनिषूदन) नाम है ८३१।८८

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥८९॥

अर्थ—हजारन आपके सूर्य रूप किरण हैं इससे आपका (सहस्रार्चि) नाम है ८३२ काली, करालि, मनोजवा, सुलोहिता (वर्णा, स्फुलिंगनी, विश्वरुचि ये आपकी सात जिह्वा हैं, अथवा आप अपनी

जिह्वा से सब प्रकार की वाणी बोले हैं इससे आपका (सप्तजिह्व) नाम है ८३३ सात प्रकारकी लकड़ी यज्ञ में हैं इससे आपका (सप्तैधा) नाम है ८३४ सप्ति नामका घोड़ा अथवा अग्नि रूप सात बाहन है इस कारण आपका (सप्तवाहन) नाम है ८३५ हाथ पाँव शरीरके अवयवन करके रहित होने से आपका (अमूर्ति) नाम है ८३६ पाप रहित हो इससे आपका (अनघ) नाम है ८३७ आपको कोई यह नहीं जान सके कि यह परमात्मा हैं इससे आपका (अचिन्त्य) नाम है ८३८ अधर्मियों को भय देने वाले हैं इससे आपका (भयकृत) नाम है ८३९ भक्तों के भयका नाश करते हैं इससे आपका (भयनाशन) नाम है ८४०।८३

अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणोमहान् ।

अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशोवंशवर्धनः॥९०॥

अर्थ—अणु से भी सूक्ष्म हैं इस कारण आपका (अणु) नाम है ८३९ब्रह्मांड में व्याप्त होने से आपका (बृहत) नाम है ८४० बहुत हल्के होने से आपका (कृश) नाम है ८४१ सबको आत्मा होने से आपका (स्थूल) नाम है८४२ सत्वरजतम गुणों के धारण करने से आपका (गुणभृत) नाम है ८४३ परमार्थ करके गुणों का अभाव हैं इस कारण आपका (निर्गुण) ८४४ नित्य स्वच्छ शुद्ध सूक्ष्म सर्वज्ञ और अतर्क्य हैं इससे आपका (महान्) नाम है ८४५ आप सबको धारण करते हैं आप निराधार हैं इससे आपका (अधृत) नाम है ८४६ आपही आत्माको धारण करते हैं इससे आपका (स्वधृत) नाम हैं ८४७ सुन्दर मुख अथवा वेद आपके मुख से

निकला इससे आपका (स्वास्य) नाम है ८४८ ब्रह्मादि आपसे उत्पन्न हुए इससे आपका [प्राग्वंश] नाम है ८४९ प्रपंच को बढ़ाने से आपका [वज्रवर्द्धन) नाम है ८५०।९०

भारभृत्कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः ।
आश्रमः श्रमण क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥९१॥

अर्थ--मुक्तजीवों के बंधमोक्ष भार के धारण करने से आपका [भार-भृत] नाम हैं ८५१ सर्वशास्त्रों में निरूपित होनेसे आपका [कथित] नाम हैं ८५२ अघटित घटन करने से आपका (योगी) नाम है ८५३ सनकादि योगियों के स्वामी होने से आपका (योगीश) नाम है ८५४ योग से भ्रष्ट होने वालों को अणिमादि सिद्धि काम देने से आपका (सर्वकामद) नाम है ८५५ सुभिक्ष पर विद्योपासकों में बिश्राम लेते हो इससे आपका (आश्रम) * नाम हैं ८५६ समाधिस्थों को समाधि के अभ्यास कराने वाले होने से

---

*आश्रम्यन्ते विश्रांतिं प्राप्यतेनेन श्रमु तपसि स्वेदे च आङ्पूर्वः णिच् वृद्धिः अमन्तत्वात् मित्वे मितांह्रस्वः ततोऽकर्त्तरिचकारके इत्यनुवृत्तौ एरच् इति करणे अच् णिलोपः एवंसिद्धे भागजन्मभ्यां अप्यनुपत्तीणा पूर्वसंस्कारैः समाधि शेषोऽनायासेन श्रम्यते परे-श्रम्यतेऽभ्य यने विषय भूतेऽस्मिन् अम्मात् अस्मै अनेनेतिवा तत्र-समाधि शेषेण श्रम्यतेऽयस्यतेऽम्ऽयम् इतिवा ते श्रम्यन्ते समाधि शेषाभ्यासंप्राप्यंतोऽनेनेति ॥

आपका (अमण) * नाम है ८५७ योग भ्रष्ट भी जिसके अनुग्रह से दुर्ग के तरने को समर्थ होते हैं इससे आपका (त्राम) नाम है ८५८ प्राप्त समाधि वाले मनुष्यों को संसार के पार होने से आपका (सुवर्ण) नाम है ८५९ पवन सदृश बाहन होने से आपका (वायुवाहन) नाम है ८६० ॥ ९१ ॥

धनुर्द्धरो धनुर्वेदो दंडो दमयिता दमः ।
अपराजितःसर्वसहो नियंताऽनियमो यमः ।९२।

अर्थ—भक्तों के विरोधियों के मारने को धनुष धारण करने से आपका (धनुर्धर) नाम है ८६१ इन्द्रादिक आपसे ही धनुर्वेद को प्राप्त होते हैं इससे आपका (धनुर्वेद) नाम है ८६२ वेदमार्गोत्थ विरोधियों के दण्ड देने वाले होने से आपका (दण्ड) नाम है८६३ रावणादि दुष्टों को दमन करने वाला स्वभाव होने से आपका (दमयिता) नाम है ८६४ जिसका दमन करने वाला कोई नहीं है इससे (अदम) नाम है ८६५ कचित कदाचित् कुतश्चित् जिसके जय करने वाले का अभाव होने से आपका (अपराजित) नाम है ८६६ सबके सहने वाले होने से आपका (सर्वसह) नाम है८६७ सबके नियम करनेवाले होनेसे आपका(नियन्ता) नाम है ८६८ नियम्यों का भोगादि संपद देने वाले होने से आपका (नियम) ८६९ यम आदिकों के भी यमरूप होने से आपका (यम) नाम है ८७० ॥९२॥

---

* अमयति तत्र तांस्तसभ्यासयति धातु प्रागवत् ततः अधिकरणापादानं सप्रदान कर्मवर्तृषु कृत्यल्युटार्वहुलम् इति बहुलकात् ल्युट् तत्रचाधिकरणापादान संप्रदान कर्मसु शुद्धात् करणे केवलात् एपताच्च कर्तुरितु रायन्ता देवचायम् इति विवेकः

सत्ववान् सात्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः।
अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हःप्रियकृत प्रीतिवर्द्धनः ।६३

अर्थ—मोक्ष रूपसत्व के नित्य सम्बन्ध रखने से आपका (सत्ववान्) नाम है ८७१ धर्म ज्ञानादि सत्व से योग्य होने से आपका (सत्विक) नाम है ८७२ यथार्थ वैभव होने से आपका (सत्य) नाम है ८७३ सत्य रूपधर्म में परायण होने से आपका (सत्यधर्मपरायण) नाम है ८७४ निरुपाधि उद्देश्य से अभिप्राय किये जाते हो इससे आपका [अभिप्राय] नाम है ८७५ प्रिय के योग्य होनेसे [प्रियार्ह] नाम है ८७६ अनन्येच्छा वालों के पूज्य पाद होने से आपका [अर्ह] नाम है ८७७ अन्यनन्य भक्तों के प्रिय करने वाले हो इससे आपका [प्रियकृत] नाम है ८७८ प्रीति के बढ़ाने वाले हो इससे आपका [प्रीतिवर्धन] नाम है ८७९ ॥ ६३ ॥

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥६४॥

अर्थ—निरूढ़ भक्तियुक्तों से अर्चिरादिगति से गम्य होने से आपका [बिहायसंगति] नाम है ८८० ज्योतिरूप होने से आपका [ज्योति] नाम है ८८१ सूर्योदय से रोचमानदिन रूप होने से आपका [सुरुचि] नाम है ८८२ अमृतहुत का भोगनेवाला चन्द्रमा जिससे पूर्ण होता है इससे आपका [हुतभुग्विभु] नाम है ८८३ दक्षिणोत्तरायण गति होने से [रवि] ८८४ सूर्य के

भी प्रकाश होने से आपका [विरोचन] नाम है ८८५ पवन आपका चलाया चलता है इससे आपका सूर्य नाम है ८८६ सूर्य द्वार से वर्षा तथा खेती आदि को उत्पन्न करने से आपका [सविता] नाम है ८८७ सूर्य किरणों के सम्बन्ध से बिजली वरुण और चन्द्रमा को सम्यक रीति से निरंतर प्रकाश करने से आपका (रविलोचन) नाम है ८८७।९४

अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकदोऽग्रजः ।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ९४

अर्थ—सप्तन्तुयज्ञों में हवन किये का भोक्ता इंद्रहुत भुक् और प्रजापालन करने वाला प्रजापति वो दोनों जिसके बड़े हो इससे आपका [अनन्तहुतभुक्भोक्ता] नाम है ८८९ भक्तजनों को निज प्राप्ति रूप सुख के देने से आपका (सुखद) नाम है ८९० मुक्तपुरुषों को ब्रह्मालंकार देनेवाली दिव्याक्षरों के विद्यमान होनेसे आपका (नैकद) नाम है अथवा भोगमोक्षादि अखिल पदार्थों के देनेमें समर्थ होनेसे आपका (नैकद) नाम है ८९१ मुक्तजनों के अगाड़ी सर्वैश्वरी लक्ष्मी सहित प्रथम प्रादुर्भाव होने से आपका (अग्रज) * नाम है ८९२ इस प्रकार आश्रितों को संसार दुर्गसे पाकर अपनी प्राप्तिकरा कर वाक्‍ अशोच्य रूप से देखना चाहने से आपका (अनि-

---

* जना प्रादुर्भावे सप्तम्यांजनेर्डः टिलोपः एवं प्राप्तानां मुक्तानामग्रे सहसर्वैश्वर्यश्रिया यथा पर्यंक विध पर भौग्यो जायते प्रादुर्भवति अग्रजः (ऋजेन्द्राग्र) इत्युणादि ना गक्रिइदित्वानुमो निपातना ल्लोपे नेत् वशोति इट् प्रतिषेधेकाग्रशब्द उक्तः

विश्रा) ❀ नाम है ८९३ आश्रित जनके किये को सब समय सहने से आपका (सदामर्षी) नाम है ८९४ मुक्तजनों के नित्याश्रय होने से आपका (लोकाधिष्ठान) नाम है ८९५ सबजनों को सब समय अतिशय विस्मय प्रद होने से आपका (अद्भुत) नाम है ८९६।८९५

सनात्सनातनतमःकपिलःकपिरव्ययःस्वास्तिदः।
स्वस्तिकृत्स्वस्तिस्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः।९६।

अर्थ—उन आश्रितों के संभजन से आपका [सनातनम) नाम है ८९७ अत्यन्त सनातन होने से आपका [सनात्] नाम है ८९८ विजुली के मध्य में स्थित नील मेघके समान उज्वल होने से आपका [कपिल] नाम है ८९९ आप भी तदनुभव सुखके पालन करने से आपका (कपिरव्यय) नाम है ९०० ॥

॥ इति नवमं शतकं व्याख्यातम् ॥

इतोग्रे दशमं शतकं व्याख्यायते

अतिमहत् मंगलके देने वाले होने से आपका (स्वस्तिद) नाम है ९०१ सब समय उनकी स्वस्ति करने से आपका स्वस्ति कृत् नाम है ९०२ आशीर्वाद रूप होने से आपका स्वस्ति नाम है ९०३ महामंगल के पालन करने से आपका स्वस्तिभुक् नाम है

❀ विद् सत्तायाम् दिवादिः वा विद् विचारणे निपूर्वः निसस्तु सोरुत्वम् ततःकर्तरिक्तः अनिट् अगुणः रदाभ्यां इति निष्ठातस्यनः पूर्वस्यदस्वनः ।

९०४ आत्मदानरूप दक्षिणा के देने से आपका स्वस्तिदक्षिण नाम है ९०५।९६

अरौद्रः कुंडली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः॥९७॥

अर्थ—सर्वैश्वर्य के विद्यमान होने पर भी सुगुण तथा शीतल रहने से आपका (अरौद्र) नाम है ९०६ मकराकार कुण्डलादि भूषणों के नित्य योगसे आपका कुण्डली नाम है ९०७ चक्र को सब समय धारण करने से आपका चक्री नाम है ९०८ अनन्त गोप-बंधुओं से विलास करनेसे आपका बिक्रमी नाम है ९०९ ब्रह्मादिकों करके शिरोधार्य होने से आपका ऊर्जित शासन नाम है ९१० शेष सरस्वती और वेद भी आपकी महिमा को नहीं कह सकते इससे आपका शब्दातिग नाम है ९११ गजेंद्रादिकों के आर्त शब्द को अति भारकी तरह सहने से आप का (शब्दसह) (१) नाम है ९१२ गजेन्द्र रक्षणार्थ अति शीघ्र गमन करने से (शिशिर) (२) नाम है ९१३ तदुद्धार के लिये पाँचों शस्त्रों के हाथ में होने से आपका (शर्वरीकर) नाम है ९१४।९७

---

[१] सहते असौसहः शब्दस्य सहशब्दसह पूर्व सहमर्षणे इत्यस्मात पचाद्यच् पश्चात षष्टात, समासः यद्वाशा शयिभ्यौं ददनौ झलांजश् झशि इति जश्त्वं पस्यवः षह अमर्षणे षः सः पचाद्यच् ।

(२) शशति प्लवते इति शिशिरः शशप्लुतगतौ [अजिरशशिर] इत्यादिना रक् प्रत्ययान्तो निपातितः

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवण कीर्तनः ॥९८॥

अर्थ—पच्चा युधी के होने पर भी क्रूरतारहित होनेसे आपका (अक्रूर) नाम है ९१५ शीघ्रता होनेपर वस्त्र भूषण के गिर जाने पर भी अति सुन्दर होने से आपका (पेशल) नाम है ९१६ रक्षा करने में शीघ्रता में प्रवीण होने से आपका (दक्ष) नाम है ९१७ प्रसन्न गजेन्द्र को अभय दक्षिणा देने से आपका (दक्षिण) ९१८ गजराज को देख कर उद्धार करने में मन धारण करने से आपका क्षमिणांवर नाम है ९१९ शरणागत रक्षणके अतिशय जानने वाले होनेसे आपका (विद्वत्तम) नाम है ९२० गजेन्द्रके भय दूर करने में अति प्रवीण होनेसे आपका (वीतभय) नाम है ९२१ अति पवित्र गजेन्द्र मोक्षण रूप कीर्तन आपका इससे आपका (पुण्यश्रवण कीर्तन) नाम है ९२२॥ ९८ ॥

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ।
वीरहा रक्षणः संतो जीवनःपर्यवस्थितः॥९९।

अर्थ—मकर की आपत्ति से उद्धार करने से आप का [उत्तारण] नाम है ९२३ ग्राह के मुख के विदारण करने से आप का (दुष्कृतिहा नाम है ९२४ दिनोद्धारण कीर्ति से अस्मादादिकों के पवित्र करने से आपका (पुण्य) नाम है ९२५ गजेंद्र मोक्षणयश के श्रवण करने से दुःस्वप्नदर्शन दोष के दूर करने से आपका (दुःस्वप्ननाशन) नाम है ९२६ वीरों के मारने वाले होने से आपका

[वी हा] (१) नाम है ६२७ शरणागत का रक्षण करने से आपका [रक्षण] नाम है ६२८ आश्रितोंके सम्यग्प्रीति से बढ़ाने वाले होनेसे आपका (सन्त) (२) नाम है ६२६ मृतप्राय गजेंद्र को जीव दान देनेसे आपका (जीवन) नाम है ६३० वात्सल्य भाव से गजेन्द्र को सब समय समीप रहने से आपका (पर्यवस्थित) नाम ६३१ ॥ ६६ ॥

अनन्त रूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।

चतुरस्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशोदिशः १००

अर्थ--असंख्य रूप होने आपका (अनन्तरूप) नाम है ६३२ अनंतैश्वर्य होने से आपका (अनन्त श्री) नाम है ६३३ गजेंद्र द्वेषिजल जन्तुओं पर क्रोध जीतने से आपका (जीतमन्यु) नाम है ६३४ वात्सल्य से अनाथों के भय दूर करने से आपका (भयापह) नाम है ६३५ आर्त आश्रित पर उचितानुग्रह करने से आपका (चतुरस्र) नाम है ६२६ चतुर्मुखादिकों को भी अथाह गांभीर्य होने से आपका (गभीरात्मा) नाम है ६३७ विनय गद्गद स्तुति वाणीयों के विविध देश होने से आपका (विदिश) नाम है ६३८ ब्रह्मादिकों को पृथक् २ लोकरक्षण में नियोग करने से आपका (व्यादिश) नाम है ६३६ ब्रह्मादिकों के सर्व कृत्य में आज्ञा देने वाले होने से आपका (दिश) नाम है ६४० ॥ १०० ॥

---

(१) हनः क्विश् (स्फायि तञ्चि) इति रक् अजेर्वी पचिर्यचि णिलोपो वा हन्नान्तलक्षण दीर्घादि

(२) अन्येष्वपि दृश्यते इतिडः तेषां अस्तीतिवा सन्तः वचन व्यत्ययः तेभ्यह इष्टं दत्तवान् सनोतेनिष्ठा आत्व विकल्पः

**अनादिर्भूर्भुवा लक्ष्मीः सुवीरो रुचिरांगदः ।
जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः॥१०१॥**

अर्थ–आदिके न होने से आपका अनादि नाम है ६४१ सत्य अपने दास्य भावसे आत्म लाभ वाले को भूर्भुवादि लोकोंके देने से आपका (भूर्भुव) नाम है ६४२ उन्हीं आश्रितों के लक्ष्मी (धन) रूप होनेसे आपका लक्ष्मी नाम है ६४३ उन्हीं आश्रितों के विनिपाति के प्रतीकार करने में समर्थ होने से आपका (सुवीर) नाम है ६४४ प्रपन्न जनोंको स्वानुभुवयोग्य अङ्ग देने से आपका (रुचिरांगद) नाम है ६४५ सबके कारण होनेसे आप का (जनन) नाम है ६४६ उन्हीं जनोंके जन्म के कारण होने से आपका जन-जन्मादि नाम है ६४७ विमुख जीवों को जन्म मरणादि भय रूप होनेसे आपका (भीम) नाम हैं ६४८ लोक के अहित जीवों के अर्थ भीम पराक्रम वाले होने से आपका (भीम पराक्रम) नाम है ६४६।१०१

**आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः १०२**

अर्थ—जगतके आधार धार्मिक प्रहलादादिकों में निवास करने में आपका (आधारनिलय) नाम है ६५० धर्माचार्य होने से आपका (धाता) नाम है ६५१ पुष्पवत् विशद होने से आपका [पुष्पहास] नाम है ६५२ आश्रित रक्षण में कृषीबल की तरह नित्य लगने से आपका (प्रजागर) नाम है ६५३ स्वभाव से

ही उच्च होने से आपका [ऊर्ध्वंग] नाम है ६५४ सन्मार्ग प्रवर्तन के आचार्य होने से आपका [सत्पथाचार] नाम है ९५५ सबको प्राण दान देने वाले होने से आपका (प्राणद) नाम है ६५६ सब प्राणोंको परमात्मा में प्रणाम कराओ हो इससे आपका [प्रणव] नाम है ६५७ इस तरह उन भक्तों से स्वाम्य दास्य भाव परस्पर बदले से व्यवहार रखने से आपका [पण] नाम है ६५८।१०२

प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत् प्राणजीवनः।
तत्वं तत्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः१०३

अर्थ—वेदाभिप्रायके प्रतीत कराने वाले होने से आप का [प्रमाण] नाम है ९५८ पक्षियों के घोसले की तरह प्राणों के लय स्थान होने से आपका [प्राणनिलय] नाम है ६६० माता की तरह प्राणों के धारण करने से आपका [प्राणधृत] नाम है ६६१ अन्न की तरह जगत् के जिवाने वाले होने से आपका प्राणजीवन नाम है ६६२ जगत में सारांश रूप होने से आपका [तत्व] नाम है ६६३ अपने तत्वको आपही जानने वाले होनेसे आपका (तत्ववित्) नाम है ६६४ सर्वत्र एकात्म रूपसे वर्तमान होनेसे आपका (एकात्मा) नाम हैं ६६५ चेतना चेतन जीव धर्म से रहित होने से आपका (जन्ममृत्यु जरातिग) नाम है ६६६।१०३

भूर्भुवः स्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः।
यज्ञोयज्ञपतिर्यज्वा यज्ञांगो यज्ञवाहनः ॥१०४॥

अर्थ-भूरादिलोकों के जीवों के समाश्रयण होने से आपका (भूर्भुवःस्वस्तरु) नाम है ६६७ संसार समुद्र के पार लगाने वाले

होने से आपका (तार) (१) नाम हैं ९६८ सबके पैदा करने वाले होने से आपका (सविता) (२) नाम है ९६९ ब्रह्माजी के भी जनक होने से आपका (प्रपितामह) (३) नाम है ९७० अपनी आराधन समृद्धि रहितों को आपही यज्ञ रुप होने से आपका (यज्ञ) (४) नाम है ९७१ यज्ञों के फल देनेवाले होने से आपका (यज्ञपति) नाम है ९७२ यजन करने वाले भी आप हो इससे आपका (यज्वा) नाम है ९७३ यज्ञ आपका अंग होने से आपका (यज्ञांग) नाम है ९७४ उन यज्ञ करने वालों की श्रद्धाधिकार देने से आपका (यज्ञवाहन) नाम है ९७५।१०४

यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः ।

यज्ञांतकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नादएवच ॥ १०५ ॥

अर्थ—पूर्णाहुति द्वारा विफल यज्ञको भी पूर्ण करने वाले होने से आपका (यज्ञभृत) नाम है ९७६ जगद्धितार्थ यज्ञ करने से

---

(१) (तारः) तरते एयतात पचाद्यचि णिजोपेच तार उक्तः ।

(२) तान् साक्षाज्जयति इति सविता सूङ्प्राणिगर्भ विमोचन धा, तस्मातृच् स्वर तोति वेट् गुणावौ

(३) पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः इति डामहतुनि पात्यते तद्धितः भसंज्ञायाम् टेः इति डितिटेर्लोपः तत प्रपूर्वः कुगति प्रादयः इति प्रादिसमासः सचप्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया समासः ।

(४) यज याच बिछ विछ प्रछ रक्षोनङ इति अनिट् मस्य नः

(यज्ञभृत्) नाम है ६७७ सब यज्ञों के शेष रूप होने से आपका यज्ञी नाम है ६७८ सर्व देव रूप होकर भोक्ता होने से आपका (यज्ञभुक) नाम है ६७६ यज्ञ के सिद्धि करने वाले आपही हो इस से आपका (यज्ञसाधन) नाम है ६८० और अपने तत्व ज्ञान से क्षण भर में यज्ञों की समाप्ति को निरपेक्ष होकर करते हो इस से आपका [यज्ञांतकृत] नाम है ६८१ जो नित्य तृप्त होकर भी अतृप्तकी तरह पुरोडासादिक को भोजन कर उसके यथोक्त फल देने वाले होनेसे आपका (यज्ञगुह्य) [१] नाम है ६८२ इस प्रकार निष्पादन किये अन्न रूप होने से आपका (अन्न) [२] नाम है ६८३ उस निष्पादन किये अन्नको भोक्ता सब देव रूप हो भोजन करने से आपका (अन्नाद) नाम है ६८४॥१०५

आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः।

देवकीनन्दनः स्रष्टाक्षितीशः पापनाशनः १०६

अर्थ—दुग्ध से मिश्री की तरह भोक्ता को अपने स्वरूप से एक मिलाने से आपका (आत्मयोनि) नाम है ६८५ प्रार्थना निरपेक्ष होकर जन्म लेने से आपका (स्वयंजात) नाम है ६८६ जन्म लेकर जगत के दुःख के समूल खो देने से आपका (वैखान)

---

(१) गुहू संवरणे शसि दुहि गुभ्योवा इति काशिका मतेन ण्यत् विषये पाक्षिकः क्यप् कृत्यप्र-

(२) अद् भक्षणे कर्मणिक्तः नचः अदोजग्धिल्यप्ति कितीति तादो कित्यदोजग्ध्यादेशः शङ्क्यः अन्नाणः अदौनन्ने इत्यादिनिर्देशेन संज्ञायांतदभावज्ञापनात् रदाभ्यामिति निष्ठा तस्यनः पूर्वस्यदस्यचनः ।

नाम है ९८७ सामगान करने वाले मुक्तों के आपके विद्यमान होने से आपका सामगायन नाम है ९८८ देवकी के पुत्र होकर आनन्द देने से आपका देवकीनन्दन नाम है ९८९ अनेक ब्रह्मांडों को सजते हो इससे आपका स्रष्टा) नाम है ९९० भूभार क्लेश क दूर करने से आपका (क्षितीश) नाम है ९९१ प्रपन्नजनों को बाहिर भीतर के पाप दूर करनेसे आपका [पाप नाशन] नाम है ९९२।१०६

शंखभृन्नन्दको चक्री शार्ंगधन्वा गदाधरः ।
रथांगपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥ १०७॥

✻ सर्वप्रहरणायुधोंनमइति ✻

अर्थ—परम ऐश्वर्य लक्षण यो अहंकारतत्व शंख धारण करने से आपका (शंखभृत्) नाम है ९९३ विद्यातत्वात्मक नन्दक नाम खड्ग को नित्य धारण करने से आपका (नंदकी) नाम है ९९४ सुदर्शन को भक्त रक्षणार्थ मनस्तत्वात्मक सुदर्शन चक्र को सब समय धारण करने से आपका (चक्री) नाम है ९९५ कालरूप शार्ग नाम धनुष धारण करने से आपका (शार्ंगधन्वा) नाम है ९९६ बुद्धितत्व कौमोदकी गदा धारण करने से आपका (गदाधर) नाम है ९९७ और रथांग (चक्र) के धारण करने से आपका (रथांग-पाणि) नाम है ९९८ कोई आपको क्षोभ नहीं करा सकता इससे आपका (अक्षोभ्य) नाम है ९९९ जिनकी गणना न हो सके अमर्याद जिनकी सामर्थ्य और आश्रित जनों के रक्षणार्थ सर्वत्र सर्वथा सर्व प्रकार दीक्षा देनेवाले अनन्त आयुध (शस्त्र) उनको

सब समय धारण करते हो इससे आपका (सर्वप्रहरणायुध) नाम है १००० ।

इति दशमं शतकम् व्याख्यातम् समाप्तम् शुभम् ।

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः ।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् १०८

अर्थ—अब अगाड़ी इस नाम सहस्त्र के महत्वको ग्रहण कराते भीष्मजी युधिष्ठिरजी से कहते हैं कि हे राजन ! जो कोई मनुष्य कीर्तन करने योग्य इस महात्मा केशवदेव भगवान के सब दिव्य सहस्र नामों को कीर्तन करता है जो सहस्र नाम मैंने आपके अगाड़ी कीर्तन किये हैं १०८

य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् ।
नाशुभं प्राप्नुयात्किंचित्सोऽमुत्रेह च मानवः १०९

अर्थ—इन १०८ नामोंको जो जो नित्य सुनता है वो मनुष्य इस लोक में और परलोक में और कभी किसी प्रकार के अमंगल को नहीं प्राप्त होता है १०९ ॥

वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रियो विजयीभवेत्
वैश्योधनसमृद्धः स्याच्छुद्रः सुखमवाप्नुयात् ११०

अर्थ—अनधि रूढ़ भक्तिवाले ब्राह्मणादि वर्णों को पृथक फल कहते हैं यदि ब्राह्मण हो तो वो वेदों के अन्त का जानने वाला हो क्षत्रिय

होवे तो वो सर्वत्र विजय करने वाला वैश्य होवै तो वो सर्व धनों से समृद्ध और शूद्र होवे तो वो भी सुख पाने वाला होता है ११० ।

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थीचार्थमाप्नुयात् ।
कामानवाप्नुयात्कामीप्रजार्थीचाप्नुयात्प्रजान्

अर्थ- धर्मार्थी पुरुष को धर्म धनेच्छु को धन कामी पुरुष को मनोभिलसित काम और संतति की इच्छावाले को उत्तम सन्तति की प्राप्ति होता है १११ ।

भक्तिमान्यः सदोत्थायशुचिस्तद्गतमानसः ।
सहश्रं बासुदेवस्य नाम्नामेतत्प्रकीर्तयेत् ११२॥

अर्थ--और जो भक्तिमान् मनुष्य हठकर सब समय भगवान् में मन लगाकर पवित्र होकर इन बासुदेव भगवान् के सहस्र नामों की कीर्तन करे ११२ ॥

यशः प्राप्नोतिविपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च ।
अचलांश्रियमाप्नोति श्रेयःप्राप्नोत्यनुत्तम् ११३

अर्थ—वो विपुलयश ज्ञाति में प्राधान्य अचला लक्ष्मी और अनुत्तम (सर्वोत्तम) कल्याणको प्राप्त होता है ११३ ॥

न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विंदति ।
भवत्यरोगो द्युतिमान् बलरूपगुणान्वितः ११४

अर्थ—और उसको कभी किसी प्रकार का भय प्राप्त नहीं होता है वीर्य और तेज को प्राप्त होता है रोग रहित होकर बड़ा तेजवान और बलरूप गुण से युक्त होता है ११४

रोगार्त्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भयान्मुच्येतभीतस्तु मुच्येतापन्नआपदः ११५

अर्थ—रोगार्त मनुष्य रोग से, बंधा हुआ बन्धनसे डरपा हुआ डर से और आपद्ग्रस्त मनुष्य सर्वापदों से छूट जाता है ११५ ॥

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ११६

अर्थ-जो भक्ति युक्त मनुष्य इन सहस्त्र नामों से नित्य पुरुषोत्तम भगवान् की स्तुति करता बहुत शीघ्र ही सब दुर्गों को तर जाता है ॥ ११६ ॥

वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ११७

अर्थ—वासुदेव के आश्रय लेने वाला वासुदेव परायण मनुष्य सब पापों से छूटकर सनातन ब्रह्म को प्राप्त होता है ॥ ११७ ॥

न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यतेक्वचित् ॥

जन्ममृत्युजराव्याधिभयंनैवोपजायते ॥ ११८॥

वासुदेव के भक्तों को कभी कोई अशुभ नहीं होता है और जन्म मृत्यु जरा और व्याधि को भी भय कभी नहीं होता है ॥ ११८ ॥

इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
युज्येतात्मसुखं क्षान्तिः श्रीधृतिःस्मृतिकीर्तिभिः

अर्थ—श्रद्धा भक्ति युक्त होकर जो पुरुष इस सहस्र नाम स्तोत्र को पढ़े तब वो आत्म सुख शान्ति श्री धृति स्मृति और कीर्ति आदि अखिल गुणों से युक्त होता है ॥ ११६ ॥

न क्रोधोनच मात्सर्य्यं न लोभोनाशुभामतिः ।
भवंतिकृतपुण्यानां भक्तानांपुरुषोत्तमे ॥१२०॥

अर्थ-और पुरुषोत्तम में भक्ति रखने वाले कृत पुण्य मनुष्यों को क्रोध मत्सरता लोभ और अशुभ मति कभी नहीं होते हैं ॥ १२० ॥

द्यौःसचन्द्रार्कनक्षत्रा खंदिशाभूर्महोदधिः ।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानिमहात्मनः॥ १२१॥

अर्थ- चन्द्रमा सूर्य और नक्षत्रों सहित आकाश दिश भूर्लोक और महोदधि यह सब वासुदेव महात्मा के ही वीर्य से धारण किये हैं ॥ १२१ ॥

ससुरासुरगंधर्व सयक्षोरगराक्षसम् ।
जगद्वशेवर्ततेदंकृष्णस्य सचराचरम् ॥ १२२ ॥

सुर असुर गन्धर्व यक्ष सर्प राक्षस ये सब चराचर जग कृष्ण के वंशमें वर्तता है ॥ १२२ ॥

इंद्रियाणिमनोबुद्धिः सत्वंतेजोबलंधृतिः ।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रक्षेत्रज्ञएवच ॥ १२३

इसी तरह इन्द्रिय मन बुद्धि सत्व तेज बल और धृति क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ इन सबको भी बासुदेवका रूप बताते हैं ॥ १२३ ॥

सर्वागमानामरचारः प्रथमं परिकल्पते ।
आचारःप्रथमोधर्म्मोधर्मस्यप्रभुरच्युतः ॥ १२४ ॥

सब धर्मों के प्रमाण भूत प्रथम आचार कल्पना किया है और उस धर्मका भी प्रमाण भगवान् अच्युत ही है ॥ १२४ ॥

ऋषयः पितरो देवा महाभूतानिधातवः ।
जंगमाजंगमंचेदं जगन्नारायणाद्भवम् । १२५ ।

ऋषि पितर देव महा भूतत्वक चर्म आदि धातु और ये स्थावर जंगम जगत् नारायणसे उत्पन्न होता है ॥ १२५ ॥

योगोज्ञानं तथासांख्यंविद्याः शिल्पादिकर्मच ।

वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात् १२६

अर्थ—योग ज्ञान सांख्य विद्या शिल्पादि कर्म वेद शास्त्र और विज्ञान ये सब जनार्दन से उत्पन्न होते हैं ॥ १२६ ॥ ॥

एकोविष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ।
त्रींलोकान्व्यप्याभूतात्माभुक्ते विश्वभुगव्ययः १२

अर्थ-वो ही एक विष्णु इस महद्भुत अनेक पृथग्भूतों को और तीन लोकों को व्याप्तकर वोही विश्वमुक्त अव्यय सबका पालन करता है ॥ १२७ ॥

इमंस्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् ।
पठेद्यइच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानिच १२८॥

अर्थ—जो पुरुष अपना कल्याण और सुख को प्राप्त हुआ चाहै तो श्रीवेद व्यासजी के कीर्तन किये इसी स्तोत्र को पाठ करै ॥ १२८ ॥

विश्वेश्वरमजंदेवं जगतः प्रभवाप्ययम् ।
भजंति ये पुष्कराक्षं न ते यान्तिपराभवम् १२९

अर्थ—विश्व के ईश्वर अजदेव जगत के उत्पति प्रलय करने वाले कमल लोचन भगवान को जो भजते हैं वो पुरुष कभी पराभव को नहीं प्राप्त होते हैं ॥ १२९ ॥

अर्जुन उवाच

पद्मपत्रविशालाक्ष पद्मनाभ सुरोत्तम ।
भक्तानामनुरक्तानां त्राताभवजनार्दन ॥ १३०

अर्थ--अर्जुनने प्रश्न किया कि हे कमल दलवत् विशाल नेत्र हे पद्मनाभ हे सुरोत्तम भक्तों के ऊपर अनुग्रह कर हे जनार्दन तुम भक्तों की रक्षा करने वाले होउ ॥ १३० ॥

श्रीभगवानुवाच

योमांनामसहस्रेण स्तोतुमिच्छति पांडव ।
सोहमेकेन श्लोकेन स्तुत एव न संशयः १३१॥

अर्थ--तब भगवान् ने कहा कि हे पाण्डुनन्दन जो कोई मुझे सहस्त्र नामों से प्रार्थना करा चाहे वो मैं इस श्लोक से ही निःसन्देह स्तुति किया होता हूँ ॥ १३१ ॥

नमोस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुवाहवे । सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटी युगधारिणे नमः ॥ १३२ ॥

अर्थ--अर्थ अनन्त भगवान् हजारों मूर्तिवाले हजारों चरण हजारों नेत्र शिर उरु और बाहु वाले हजारों नाम वाले शाश्वत्त

(अनादिसिद्ध) सहस्र कोटि युगके धारण करने वाले को मेरा प्रणाम होउ ॥ १३२ ॥

नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिन ।
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तुते ॥१३३॥

अर्थ--कमल नाम भगवान् को नमः जलशायिको नमः हे केशव ! हे अनन्त ! हे वासुदेव ! तुमको नमस्कार है ॥१३३ ॥

वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रायं ।
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेवनमोऽस्तुते ॥१३४॥

अर्थ--हे वासुदेव आप सर्व भूतके निवास स्थान हो सो जिस वासनासे जगत बँध रहा है उस जीवों की वासना को छेदन करौ ॥ १३४ ॥

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहितायच ।
जगद्धितायकृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः १३५

अर्थ-ब्रह्मण्य देव गोब्राह्मण के हित करने वाले जगत के हित-रूप गोविन्द के अर्थ मेरा बारम्बार प्रणाम है ॥ १३५ ॥

आकाशात्पतितंतोयं यथागच्छतिसागरं ।
सर्वदेवनमस्कारः केशवंप्रतिगच्छति ॥ १३६ ॥

आकाश से वर्षा जल जैसे समुद्र को जाता है इसी तरह सब देवों ने जिये किया प्रणाम केशव भगवान को ही प्राप्त होता है ॥१३६ ॥

एषनिष्कंटकः पंथा यत्र संपूज्यते हरिः ।
कुपथं तँविजानीयाद्गोविन्दरहितागमम् १३७

निष्कंटक मार्ग ये ही है जहाँ भगवान हरि पूजन किये जाते हैं और जो गोविंद से रहित है उसे कुपथ जानना चाहिये ॥ १३७ ॥

सर्ववेदेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषुयत्फलम् ।
तत्फलं समवाप्नोति स्तुत्वादेवंजनार्दनम् १३८

अर्थ--सब वेदों में सब तीर्थों में जो कुछ फल होता है वो जनार्दन भगवान के स्तुति करने से प्राप्त होता है ॥ १३८ ॥

योनरः पठतेनित्यं त्रिकालं केशवालये ।
द्विकालमेककालं वा क्रूरंसर्वं व्यपोहति १३९

अर्थ---जो मनुष्य इस स्तोत्र की हरि मन्दिर में एक काल दो काल अथवा त्रिकाल पाठ करता है वो अपने सब कर कर्मों को दूर कर देता है ॥ १३९ ॥

दह्यन्ते रिपवस्तस्य सौम्याः सर्वेसदाग्रहाः ।
विलीयन्ते च पापानिस्त्वेवह्यस्मिन्प्रकीर्तिते १४०

अर्थ---उस मनुष्य के सब शत्रु भस्म होते हैं उसे सब ग्रह शुभ होते हैं और इस स्तोत्र के कीर्तन करने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं ॥ १४० ॥

येनध्यात श्रुतोयेन येनायं पठितः स्ववः ।
दत्तानिसर्वदानानि सुरः सर्वेसमर्चिताः १४१॥

अर्थ---जिसने ये स्तव बढ़ाया श्रवण किया था ध्यान किया उसने सब दान दे दिये और सब देवों का पूजन कर लिया ॥ १४१ ॥

इहलोके परेवापि नभयं विद्येत क्वचित् ।
नाम्नांसहस्त्रं योऽधीतेद्वादश्यांमसभन्निधौ १४२

अर्थ---और उसको इस लोकमें वा परलोक में कभी भय नहीं होता है और जो कोई द्वादशोके दिन मेरे सन्निधि में इन सहस्र-नामों को पाठ करता है ॥ १४२ ॥

सनिर्दहति पापानि कल्पकोटिशतानि च ।
अश्वत्थसन्निधौ पार्थ कृत्वामनसिकेशवम् १४३

अर्थ --वो कोटिशतकल्पके पापों को भस्मकर देता है और पीपल के बृक्ष के समीप बैठ कर मनमें केशव भगवान को धरकर ॥ १४३ ॥

पठेन्नामहस्रं तु गवांकोटिफलं लभेत् ।
शिालये पठेन्नित्यं तुलसी वनसस्थितः।१४४ ।

अर्थ--नाम सहस्त्रोंके पाठ करने से एक कोटि गोदान के फल को पाता है अथवा शिवजीके मन्दिर में वा तुलसीबनकी सन्निधि में पाठ करने से ॥ १४४ ॥

नरोमुक्तिमवाप्नोति चक्रपाणेर्वचो यथा ।
ब्रह्महत्यादिकं पापं सर्व्वसद्योविनश्यति ॥१४५॥

अर्थ--मनुष्य मुक्ति को पाता है जैसा चक्रपाणि ने कहा है और ब्रह्म इत्यादिक सब पापोंको ततकाल ही वो नाश कर देता है ॥ ॥१४५ ॥

इति श्रीमन्महाभारते दान धर्मोतरे शतसहस्यां संहितायाँ श्री विष्णु सहस्त्रनाम्नां भाषानुवादार्थः समाप्तः

चतुर्वेद बनमालिसांज्ञ केन वैश्याग्रवाल वंशावतंस श्यामलाला-भिधाज्ञया निर्मितं भगवद्गुणरत्नकोशाभिधभाष्यं तथा शंकरभाष्य दृष्ट्वा रचितः

संवत १९६५ अषाढ़ शुक्ल त्रयोदश्यां चतुदशी युक्तायां रवि-वासरान्वितायां समाप्तिमगात् ॥



सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

लाला श्यामलाल हीरालाल,

श्याम काशी प्रेस, मथुरा ।

मुद्रक--नारायण दास, लक्ष्मण-प्रेस, गोला दीनानाथ, बनारस सिटी ।

बड़ा हारमोनियम टीचर



हारमोनियम पथ प्रदर्शक, सच्चा हारमोनियम, हारमोनियम तबला एण्ड बांसुरी मास्टर, हारमोनियम एण्ड सितार गाइड, हारमोनियम शीघ्रबोध, हारमोनियम नामक अनेक प्रसिद्ध पुस्तकें लिखने के बाद मास्टर नन्द शर्मा विशारद ने इस पुस्तक को लिखा है। केवल इतना इसको हारमोनियम की सर्वोत्तम पुस्तक कहने के लिये काफी लेखक ने बड़े परिश्रम से इतने सरल ढंग हारमोनियम स के लिखे हैं कि ऐसा आदमी जिसने कभी हारमोनियम देख न हो इस पुस्तक की सहायता से भली भांति इस विद्या को सकता है। पहिले हारमोनियम के प्रत्येक भाग का वर्णन है जिससे अगर बाजे में यदि कोई टूट फूट हो जावे तो प समझ में आजावे कि क्या खराबी हुई और कैसे दूर होसकती सब प्रसिद्ध गायनों का सरगम लिखकर उनको बाजे पर निका सिखलाया है आखिर में सैकड़ों उत्तमोत्तम गायनों का संग्रह इस पर भी पुस्तक का मूल्य १।) है।

पुस्तक मिलने का पता—

लाला श्यामलाल हीरालाल

श्याम काशी प्रेस मथुरा।